मूल सिद्धांत – 2

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

प्रस्तावना

इस अध्ययन का उद्देश्य :

★ पाप की सामर्थ्य के ऊपर विजय में जीना कैसे सीखें।
★ व्यवस्था की मांगों के ऊपर विजय में जीना कैसे सीखें।
★ यह सीखना कि आत्मा में कैसे चलना है।
★ विश्वास को स्पष्टता से समझ लेना।
★ पवित्र शास्त्र में न्यायों को स्पष्टता से समझना।
★ उसके विश्वासयोग्यों को प्रतिफल दिए जाने के बारे में सीखना।
★ दुःखभोग के विषय को समझना।
★ बाइबल के कुछ कठिन सवालों का जवाब देना।

पाठ्यक्रम रुपरेखा

1. पाप की सामर्थ्य के ऊपर विजय में जीना

क. मै उसकी मृत्यु / लहू के द्वारा बचाया गया हूं।
ख. मै उसके जीवन के द्वारा बचाया गया हूं।

1. पाप की शक्ति से : रोमियों 6
   ★ पहला कदम : '' जानना ''
   ★ दूसरा कदम : ''समझना''
   ★ तीसरा कदम : ''सौंपना''

2. व्यवस्था के दण्ड से : रोमियों 7
3. आत्मा में चलने के द्वारा : रोमियों 8

2. विश्वास को समझना
   - क. परिचय
   - ख. विश्वास क्या है ?
   - ग. विश्वास के दो पहलू हैं
   - घ. विश्वास प्रभु के तथा उसके वचन के प्रति पूर्ण समर्पण है
   - ङ विश्वास परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना और उसकी आज्ञाओं को मानना है
   - च विश्वास यह जान लेना है कि
   - छ विश्वास समस्त तर्क–वितर्क से परे है।
   - ज आपका जन्म इस विश्वास के साथ नहीं हुआ
   - झ विश्वास का महत्व
   - ञ अल्प विश्वास
   - ट विश्वास के तीन प्रकार
   - ठ विश्वास का भवन

3. न्याय
   - क. परिचय
   - ख. विश्वासी के पापों का न्याय
   - ग. विश्वासी का स्वयं को जांचने का न्याय
   - घ. विश्वासी के कार्यों का न्याय
   - ङ जातियों का न्याय
   - च दुष्टों का न्याय

4. प्रतिफल
   - क. परिचय
   - ख. जीवन का मुकुट
   - ग. अविनाशी मुकुट
   - घ. उल्लास का मुकुट
   - ङ धार्मिकता का मुकुट
   - च महिमा का मुकुट

5. दुःखभोग
   - क. परिचय
   - ख. पाप से दुःखभोग
     1. मनुष्य अपने तथा दूसरों के लिए दुःख लाता है।
     2. पाप शैतान का राज्य है, जहां उसका शासन है।

3. जब मैने पाप करना चुना, मैने शैतान के राज्य में प्रवेश किया।

ग. पापियों से दुःखभोग
   1. जब मै क्रूस का प्रचार करता हूं।
   2. हम युद्ध पर हैं।

घ. दुःखभोग जो परमेश्वर से आते हैं
   1. हमारे विश्वास और निष्ठा को परखने के लिए
   2. सेवकाई में हमें सिद्ध करने के लिए।
   3. दूसरो की सेवा के लिए हमें तैयार करने के लिए
   4. मसीह की देह के कारण
   5. कुछ बिमारी का दुःख परमेश्वर की महिमा के लिए है
   6. परमेश्वर द्वारा अनुशासित करने का परिणाम

6. कठिन बाइबल प्रश्न

क. यदि आपको अपने विश्वास पर कुछ संदेह है तो क्या होगा ?
ख. अन्त तक धीरज रखना क्या है ?
ग. मसीह का इनकार करना क्या है ?
घ. क्या आप सत्य जान कर भी अविश्वासी बने रह सकते हैं ?
ङ समझना : इब्रानियों 6:6
च. समझना : इब्रानियों 10:26
छ. समझना : जीवन की पुस्तक में लिखे गए नाम
ज. पुराने नियम की व्यवस्था तथा नए नियम विश्वासी।

पाप की सामर्थ्य के ऊपर विजय में जीना

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

अध्ययन रुपरेखा :

क. मै उसकी मृत्यु तथा उसके लहू के द्वारा बचाया गया हूं।
ख. मै उसके जीवन के द्वारा बचाया गया हूं।

1. पाप की शक्ति से : रोमियों 6
   - ★ पहला कदम : '' जानना ''
   - ★ दूसरा कदम : ''समझना''
   - ★ तीसरा कदम : ''सौंपना''

2. व्यवस्था के दण्ड से : रोमियों 7
3. आत्मा में चलने के द्वारा : रोमियों 8

क. पुनर्विवेचन : मै उसकी मृत्यु तथा मेरे लिए बहाए गए उसके लहू के द्वारा बचाया गया हूं।

1. मेरे सब पाप क्षमा हो गए। मेरे पास अनन्त जीवन है।
   2 कुरिन्थियों 5:18–21 इफिसियों 2:8–9
   यूहन्ना 5:24 इब्रानियों 9:12 ; 10:10, 14, 17

2. आप '' मसीह के साथ बैठा '' दिए गए हैं। इफिसियों 2:4–6

3. जब आप ने मसीह में विश्वास किया तब यह हुआ।
   रोमियों 3:21–28 ; 4:5 ; 11:29 ''वरदान और बुलाहट...''

4. यह धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा है। परमेश्वर के सामने मेरा ''वैद्य'' खड़ा होना।
   रोमियों की पत्री अध्याय 3,4 तथा 5 में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।

5. आप ''मसीह में '' हैं।
   गलातियों 3:26–29 ; इफिसियों 1:7, 13 यूहन्ना 10:28–29

6. अब मेरा परमेश्वर से मेल है – धर्मी ठहराए जाने का परिणाम :
   रोमियों 5:1 ''इसलिये विश्वास से धर्मी ठहराए जाकर परमेश्वर से हमारा मेल अपने प्रभु यीशु के द्वारा है।

फिर भी मेरे स्वयं के भीतर शान्ति नहीं है। मै वहां संघर्ष पाता हूं, मेरे भीतर युद्ध हो रहा है। गलातियों 5:17

ख. मैं उसके जीवन के द्वारा बचाया गया – उसका पुनरुत्थान

रोमियों 5:9–10 : '' अतः इससे बढ़कर उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए जाकर, हम उसके द्वारा परमेश्वर के प्रकोप से क्यों न बचेंगे ? क्योंकि जब हम शत्रु ही थे, हमारा मेल परमेश्वर के साथ उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हुआ तो उससे बढ़कर, अब मेल हो जाने पर हम उसके जीवन के द्वारा उद्धार पाएंगे।

यीशु हमारी क्षमा के लिए मरे
तथा पाप पर हमारी प्रतिदिन की विजय के लिए जीवित हैं।

हम उसके जीवन के द्वारा उद्धार पा रहे हैं।

1. पाप की शक्ति से रोमियों 6

मेरे पास पापों की क्षमा है तथा मुझे ''अपनी देह में पाप की शक्ति '' के ऊपर विजय चाहिए।

परमेश्वर का जवाब : क्षमा के लिए उसका लहू तथा विजय के लिए उसका जीवन।
समस्या का आरम्भ जैसे रोमियों 5:12–14 में व्यक्त है। मै '' पाप में जन्मा '' या '' पापी बना,'' इस कारण मैं पाप करता हूं। मेरे अन्दर पाप है।

उदाहरणः चीनी व्यक्ति अमरीका में पैदा हो कर भी चीनी है। यह जन्म है जो निर्धारित करता है कि आप कौन हैं। मेरे परिवार का नाम वही है, मैने उसे नहीं चुना। मेरा उससे कुछ करना नहीं है। मै कुछ नहीं कर सकता उसे बदलने के लिए। यदि मै राष्ट्रपति होता तो भी मेरा नाम वही रहता। यदि मै गरीब भिखारी, खूनी होता तो भी मेरा नाम वही रहता। जो कुछ मै करता हूं उससे मेरा नाम बदलता नहीं। मै पापी हूं इससे परवाह नहीं कि मैं कितना भी भला होने का प्रयास करुं। हम जो हैं वो हैं आदम के कारण से। उसके लहू ने मेरे पाप क्षमा कर दिए, परन्तु पाप की सामर्थ्य अभी भी मेरे अन्दर है।

पाप की शक्ति पर विजय के तीन कदम

पहला कदम : ''<u>यह जानना</u>'' रोमियों 6:3–10
होशे 4:6 ; यूहन्ना 8:32

उसने अपने लहू के द्वारा हमारे द्वारा किये गए कार्य की सुधी ली है :
और उसने हमारे सारे पापों को क्षमा कर दिया है।

उसने अपनी मृत्यु के द्वारा हम जो हैं सुधी ली है : पापी

उसके पुनरुत्थान और जीवन के द्वारा हम : ''नव जीवन की चाल'' चल सकते हैं।

उदाहरण : सरकार शराब की समस्या को हटा देना चाहती है। अतः सारी बोतलों को तोड़ डालें। परन्तु फैक्टरी अभी भी है कि और उत्पादन करे। फैक्टरी को भी हटा देना चाहिए। यूहन्ना 8:36

दूसरा कदम : '' अपने आप को समझना '' रोमियो 6:11

समझने का अर्थ है : उसका पालन करना, सत्य को अपना बना लेना।

यह एक तथ्य है, एक सत्य जिस पर आप निर्भर रह सकते हैं। इसे अपने जीवन में जोड़ लें।

यह मरकुस 11:23–24 '' ... विश्वास करो कि उसे पा चुके हो, और वह तुम्हे मिल जाएगा।''

यह सत्य पर विश्वास करने की बात है। मत्ती 9:21–22 ; 28–29

जिसे आप सत्य मान कर विश्वास करते हैं वह आपके जीवन को नियंत्रित और बदल देगा।

विश्वास दो बातों से बना है :

1. भरोसा या विश्वास तथा
2. उस पर चलना। क्रिया के कदम बढ़ाना।

याकूब 1:22, 25 ; 2:17, 20, 26।

उदाहरण : मैं 100 रु अपनी जेब में रख कर बज़ार जाता हूं। मुझे पता है कि मेरे पास कितना है और मैं कितना खरीद सकता हूं। विश्वास का कदम।

रोमियों 3 में हम प्रभु यीशु मसीह को हमारे बदले पापों का भार उठाए और लहू से क्षमा करते हुए देखते हैं।

रोमियों 6 में हम प्रभु यीशु मसीह को अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में हमें उठाए, हमारे भीतर पाप की शक्ति के ऊपर हमारे छुटकारे को सुरक्षित रखते हुए देखते हैं ।

''पाप की देह'' पुराना मैं या '' पुराना मनुष्यत्व'' मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया तथा उसके साथ मर गया है।

तथा जैसे वह मृतकों से जी उठा, मैं भी ''नए जीवन'' में जी उठा हूं।

यह नया जन्म है । (1 पतरस 1:3)

यह पाप की सामर्थ्य पर मेरी विजय और छुटकारा है।

1 यूहन्ना 3:9 : '' जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है ; और वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है।''

जो मेरे अन्दर परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, ''नया मनुष्यत्व'' ''पाप नहीं करता।'' 1 यूहन्ना 5:18

गलातियों 2:20 ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं ... मैं विश्वास से जीवित हूं'' मैं ''मसीह में'' हूं।
उसकी मृत्यु , गाड़े जाने और पुनरुत्थान में।

इब्रानियों 11:1 '' विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।''

विश्वास अनुभवों में वास्तविकता बन जाती है। हम प्रतिज्ञाओं की बात नहीं कर रहे – हम तथ्यों की बात कर रहें हैं। यह सत्य है चाहे मैं विश्वास करुं या न करुं। परन्तु, विश्वास तथ्यों को वास्तविकता बनाता है, या तथ्यों को मेरे जीवन में होने देता है।

तीसरा कदम : ''<u>स्वयं को परमेश्वर को सौंप देना</u>'' रोमियों 6:13, 19

उसने तुम्हारे लिए यह सब कुछ किया है। अब अपने आप को उसे सौंप दो।

हमें अपने समय, या धन या प्रतिभा का उपयोग अपने अनुसार नहीं करना क्योंकि वह परमेश्वर की है, हमारी नहीं है।

हमारी आंख, मुंह, कान, हाथ और पैर भी उसी के हैं।

जो कुछ भी हम हैं, और जो कुछ भी हमारे पास है, हमें ज़रुर : परमेश्वर के लिए अलग करना चाहिए यह पवित्रीकरण है।

रोमियों 6:16 शब्द ''सेवक'' वास्तव में बन्धुवा दास या गुलाम है।

सेवक या दास में क्या अन्तर है?

एक सेवक किसी अन्य की सेवा कर सकता है परन्तु कोई उसका स्वामी नहीं है। यदि वह अपने मालिक को पसन्द करता है तो सेवा करे। यदि वह उसकी सेवा न करना चाहे, तो न करे। परन्तु यह गुलाम या दास के साथ नहीं है। दास अपने स्वामी की सम्पत्ति है।

निर्गमन 21:1–6 तथा व्यवस्थाविवरण 15:12–17 ; यीशु : फिलिप्पियों 2:7
पौलुस : रोमियों 1:1 ; गलातियों 1:10 ; फिलिप्पियों 1:1 ; तीतुस 1:1 ; याकूब 1:1 ; 2 पतरस 1:1 ; प्रकाशितवाक्य 1:1

- क्या आप यीशु के सेवक हैं, या उसके दास ?

मैं कैसे उसका दास बनता हूं ?
उसकी ओर से : उसने मुझे मोल ले लिया
अपनी ओर से : मैने अपने आपको सम्पूर्ण और पूर्ण रीति से उसे सौंप दिया।

जब गलीली बालक ने अपनी रोटी उसे सौंपी, तो प्रभु ने उस से क्या किया ? केवल जब उसको तोड़ा गया और आशिष दी गई वो बहुतों के काम आई।

''जानते हुए'' कि उसने अपने आप को हमारे लिए पूर्णतः तथा सम्पूर्ण रीति से दे दिया ...
मैं उसके लिए कुछ कम नहीं कर सकता। (2 कुरिन्थियों 5:14–15)

मै उसके जीवन के द्वारा बचाया जा रहा हूं :

2. व्यवस्था के दण्ड से। रोमियों 7

रोमियों 7:5, 14, 18 यह बताती है कि हम ''शरीर में '' हैं।
यह मनुष्य से उसकी प्राकृतिक या शारीरिक दशा में बरताव करना है।
शरीर दुर्बल है। (रोमियों 8:3)
तथा '' जो शारीरिक हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।'' (रोमियों 8:8)

मनुष्य पूरा सुसमाचार सुनता है कि उसका पाप क्षमा हो जाए, वह जानता है कि वह मसीह के साथ मर गया और ''समझ'' लेता है कि यह सत्य है तथा परमेश्वर के लिए अपने आप को सौंप देता है जैसे '' मृतकों में से जीवित किया गया।'' यह विजयी मसीही जीवन का आरम्भ है।

इसलिए वह निर्णय लेता है कि उसे परमेश्वर को प्रसन्न करना है तथा उसकी आज्ञाओं या व्यवस्था का पालन करना है। तब उसे एक नई बात का पता चलता है , वह सोचता है कि वह परमेश्वर की इच्छा पूरी कर सकता है, उसने सोचा कि वह परमेश्वर की इच्छा से प्रेम करता है परन्तु उसे लगता है कि वह हमेशा इसे पसन्द नहीं करता। कई समय उसे करने के लिए एक स्पष्ट अनिच्छा होती है तथा अकसर जब वह उसे करने का प्रयास करता है तो उसे लगता है कि वह नहीं कर सकता। नैराश्य उसमे धर कर जाता है और वह अपने अनुभवों पर प्रश्न करने लगता है। जितना अधिक वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का प्रयास करता है उतना ही वह असफल होता है और वह रोमियों 7:18–19 से पौलुस के समान चिल्ला उठता है। ''इसलिए मैं जानता हूं कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कुछ भी भला वास नहीं करता। इच्छा तो मुझ में है, परन्तु मुझ से भला कार्य बन नहीं पड़ता। क्योंकि जिस भलाई की मैं इच्छा करता हूं , वह तो नहीं कर पाता ; परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही करता हूं।''

समस्या क्या है ? समस्या यह है कि हम ने अपने को व्यवस्था के अधीन में रख दिया है कि परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें। हम व्यवस्था का पालन करने का प्रयास कर रहे हैं। रोमियो 7 दिया गया कि रोमियों 6:14 के इस कथन को स्पष्ट करे तथा सच बनाए ... '' तब पाप तुम पर प्रभुता करने नहीं पाएगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।
परमेश्वर का मुझे वो देना जो मेरे पास नहीं है अनुग्रह है। परमेश्वर का वो करना जो मैं नहीं कर सकता। व्यवस्था का अर्थ है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए मुझे कुछ करना पड़ेगा। मुझे उसकी पवित्रता और धार्मिकता की मांग के लिए काम करना पड़ेगा।

मैं करता हूं परन्तु असफल रहता हूं।

तथापि : ''तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।''
हमें व्यवस्था से छुड़ा लिया गया है। उसको आवश्यकता नहीं है कि हम कुछ करें, परन्तु ''अनुग्रह में '' वह स्वयं तुम्हारे लिए करता है।

रोमियों 7 में संबोधित समस्या यह है कि मनुष्य अपने शरीर में परमेश्वर के लिए कुछ करना चाहता है। समस्या व्यवस्था में नहीं है। (रोमियों 7:12, 14, 16)

समस्या यह है कि मेरी देह कमज़ोर है, शक्तिहीन है, '' पाप में बिका '' वह कार्य कर परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता। तथा व्यवस्था का असली उद्देश्य शरीर की कमज़ोरी को सामने लाना है। (रोमियों 7:7–24)

उदाहरण : अनाड़ी सेवक
जब तक उस से किसी कार्य की आवश्यकता न हो तब तक – कोई परेशानी नहीं। परन्तु जैसे ही उस से कोई कार्य करने को कहा और समस्या आरंम्भ हुई। उसकी अयोग्यता सामने आ गई। व्यवस्था हमारी दुर्बलता या अयोग्यता को प्रकट करता है।

प्रभु जानता है कि मैं वो नहीं कर सकता जो व्यवस्था की मांग है। परन्तु समस्या यह है कि : मैं यह नहीं जानता। मैं सोचता हूं कि मैं कर सकता हूं। हमें आवश्यकता है कि हम उस स्थान में आएं जहां हमें अपनी अयोग्य और असहाय होने का स्पष्ट अनुभव हो। रोमियों 7:7 में पौलुस इस सत्य को पाता है।

हम इतने पाप से भरे, दुष्ट, बुरे और धोखे में हैं कि हम सोचते है हम कर सकते हैं। व्यवस्था दी गई कि हमारे वास्तविक स्वभाव को सामने लाया जाए। हम इतने अधिक भ्रम में है और स्वयं को इतना अधिक शक्तिशाली और योग्य समझते हैं कि परमेश्वर को हमें यह साबित करना पड़ता है कि हम क्या हैं तथा हम उसका पालन नहीं कर सकते और हमें उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। रोमियों 5:20–21 ।

व्यवस्था इस अपेक्षा से नहीं दी गई कि हमें इसका पालन करना है। यह इस पूर्ण जानकारी में दिया गया कि हम इसको तोड़ेंगे। तथा जब हमें अपनी उस बड़ी ज़रुरत का निश्चय हो गया, तब व्यवस्था ने अपना उद्देश्य पूरा कर दिया। यह हमारा ''स्कूल मास्टर है जो हमें मसीह के पास ले जाता है,'' कि मसीह स्वयं इसे हम में पूरा कर दे। गलातियों 3:24 ।

व्यवस्था से मुक्त होने का रास्ता रोमियों 7:1–4 में व्यक्त है। ''पहला पति'' व्यवस्था है। उसकी मांगे बड़ी हैं परन्तु सहायता के लिए एक ऊंगली भी नहीं हिलाता। आप ''स्त्री'' हैं, उसकी मांग पूरी करने में असमर्थ। ''दूसरा पति'' मसीह है। उसकी मांग भी वही है, शायद ज़्यादा भी (मत्ती 5:21–48) । परन्तु उसे हम से जो चाहिए, वह उसे हमारे लिए कर देता है या अपनी सामर्थ के द्वारा हम में कार्य करता है।

उसकी एक मात्र मुक्ति की आशा उसके प्रथम पति की मृत्यु के द्वारा है। परन्तु उसके टलने का कोई आसार नहीं हैं :
मत्ती 5:18 '' क्योंकि मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, व्यवस्था में से एक मात्रा या बिन्दु भी, जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाए, नहीं टलेगा।'' इसमें से निकलने का एक मात्र तरीका यह है कि यदि वह नहीं मरेगा, तो मुझे मरना पड़ेगा और विवाह समाप्त हो जाएगा। और बिलकुल यही परमेश्वर का रास्ता है हमें व्यवस्था से छुड़ाने का, रोमियों 7:4 ।

व्यवस्था कभी टलेगी नहीं । परमेश्वर की धार्मिकता की मांग सदा रहेगी, और यदि मै जीवित हूं तो मुझे इस मांग को पूरा करना है ; परन्तु यदि मै मर गया तो व्यवस्था मेरे ऊपर अपने अधिकार को खो देगा।

''मसीह में '' मेरी मृत्यु , मुझे पाप की शक्ति तथा व्यवस्था की मांग से स्वतन्त्र कर देता है। पाप अभी भी जीवित है और मुझे पुकारता है, परन्तु उसे कोई उत्तर नहीं मिलता क्योंकि मैं मरा हुआ हूं। व्यवस्था जारी है और मेरे से मांग करती है परन्तु मैं जवाब नहीं देता, मैं मरा हुआ हूं।

मर कर और अपने उस पुराने पति से मुक्त हो कर जिसने इतनी मांगे रखी परन्तु कभी हमारी सहायता नहीं की, हम अब अपने नए पति से विवाह के लिए स्वतन्त्र हैं जो हमारे लिए सब करता है।
रोमियों 7:4 '' इसलिए मेरे भाईयों, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के प्रति मृतक बना दिए गए थे कि तुम उसके हो जाओ जो मृतकों में से जिलाया गया कि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं।''

इस नए विवाह का परिणाम क्या है? ''कि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं।'' मसीह की देह के द्वारा वह मूर्ख और पापी स्त्री मर गई, परन्तु मृत्यु में उसके साथ विवाह होने के कारण वह मसीह के साथ उसके पुनरुत्थान में भी जुड़ गई है, और पुनरुत्थान के जीवन की सामर्थ के द्वारा वह परमेश्वर के लिए फल लाती है। आपसे परमेश्वर की पवित्रता की हर मांग को आप पूरा कर सकने के लिए आप में प्रभु के पुनरुत्थान का जीवन, शक्ति प्रदान करता है। परमेश्वर की व्यवस्था मिटी नहीं है ; वह सिद्धता से पूर्ण हुई है, क्योंकि जीवित प्रभु अब आप में अपना जीवन जी रहा है, और उसका जीवन सदा पिता को प्रसन्न करता है।

मत्ती 5:17 ''यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों की पुस्तकों को नष्ट करने आया हूं। नष्ट करने नहीं, परन्तु पूर्ण करने आया हूं।''
फिलिप्पियों 2:12–13 '' इसलिए मेरे प्रियों, जिस प्रकार तुम सदैव आज्ञा पालन करते आए हो, न केवल मेरी उपस्थिति में परन्तु अब उससे भी अधिक मेरी अनुपस्थिति में डरते और कांपते हुए अपने उद्धार का काम पूरा करते जाओ, क्योंकि स्वयं परमेश्वर अपनी सुइच्छा के लिए तुम्हारी इच्छा और कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए तुम में सक्रिय है।''

व्यवस्था से स्वतन्त्र हो जाने का यह अर्थ नहीं है कि हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से स्वतन्त्र है या हम अव्यवस्थित बन जाएं परन्तु यह कि मसीह अब मुझ में जीवित है और परमेश्वर को प्रसन्न करता है।

उदाहरण :
एशिया में बहुत से मज़दूर अपनी कमर और माथे पर पट्टा बांध कर अपनी पीठ पर भारी बोझ उठाते हैं। कुछ भार इतने अधिक होते हैं कि उन्हे उसे उठा पाने में भी कठनाई होती है, परन्तु फिर भी वो लालच में उसे उठाने का प्रयास करते रहते हैं। इस कारण भले ही उसे उठा पाना मुमकिन नहीं फिर भी वो प्रयत्न करते हैं। अन्त में उन्हे इसे छोड़ कर और किसी बलवान व्यक्ति को उठाने देना चाहिए।

एकमात्र यीशु ही परमेश्वर की व्यवस्था का भार उठा कर चलने के योग्य हैं। हमें अपने प्रयत्न त्याग कर ,उसे उठाने देना चाहिए।

उदाहरण :
एक मनुष्य नदी में डूब रहा है और वह और उसके साथी किनारे पर खड़े एक दूसरे आदमी को जो एक बढ़िया तैराक है,मदद के लिए पुकार रहे हैं। परन्तु वह बढ़िया तैराक खड़ा केवल देख रहा है। हर एक उस पर क्रोधित हो रहे हैं और हैरान हो रहे हैं कि वह उस डूब रहे व्यक्ति को बचाने क्यों नहीं जा रहा है। अन्त में उस डूब रहे व्यक्ति ने थक के हार गया और यह बढ़िया तैराक जल्दी से कूद कर उसे बचा लाया। जब क्रोधित भीड़ ने पूछा कि वह जवाब दे कि उसने उस व्यक्ति को बचाने के लिए इतना इन्तज़ार क्यों किया, तो जवाब आया : '' यदि मैं इस व्यक्ति को बचाने पहले गया होता तो यह मुझे इतनी कस कर पकड़ लेता कि हम दोनो ही डूब गए होते। डूबता हुआ व्यक्ति जब तक बचाया नहीं जाता जब तक कि वह पूरी तरह से थक न जाए और अपने को बचाने के लिए थोड़ा सा प्रयत्न करना भी बन्द न कर दे।''

प्रभु को पुकारने के लिए उस पर पूरी तरह निर्भर होना पड़ेगा और अपने प्रयत्न समाप्त करने होंगे, हमें अपनी सारी शक्ति और योग्यता खाली कर देनी है यह जान कर कि हम नहीं कर सकते। तब वह हमें बचाएगा।

मैं उसके जीवन के द्वारा बचाया जा रहा हूं

3. जैसे मैं आत्मा में चलता हूं रोमियों 8

रोमियों 8:1–2
''अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में हैं, दण्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है।''

दण्ड की आज्ञा नहीं है क्योंकि यीशु मसीह के लहू ने हमारे पापों को क्षमा कर दिया, परन्तु यहां यह अर्थ भी है कि :
मै अब अपने को दण्ड नहीं देता क्योंकि :
मैने यह जाना कि मै जीवित न रहा और अब :
मसीह यीशु मुझ में अपना जीवन जी रहा है।

पहले हम ने रोमियों 6 और 7 में सीखा, मैने लगातार पराजित हो कर संघर्ष किया। मै सदा चिल्लाता रहा : '' मै यह नहीं कर सकता।''
मैं चाहे कितना भी कठिन प्रयत्न करुं, मैने जान लिया कि मैं '' परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता।'' रोमियों 8:8

परन्तु जब मसीह मुझ में जी रहा है तो मसीह में ''मै नहीं कर सकता '' नहीं है।
अब यह है :
'' जो मुझे सामर्थ्य प्रदान करता है, उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूं।'' फिलिप्पियों 4:13

क्यों ? कैसे ? क्योंकि : ''क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है।''
''जीवन के आत्मा की व्यवस्था'' में ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था'' से अधिक सामर्थ्य है। इस कारण अब दण्ड की आज्ञा नहीं है।

उदाहरण : गुरुत्वाकर्षण के कारण मैं जब भी सेब छोड़ता हूं वह हमेशा नीचे गिर जाता है। परन्तु जब मैं उसे छोड़ता नहीं, तो गुरुत्वाकर्षण के ऊपर बड़ी शक्ति विजयी हो जाती है।

एक छोटा सा बीज एक विशाल पत्थर की दरार में गिर जाता है। जब वह बढ़ता है तो उस कठोर पत्थर को तोड़ता हुआ निकलता है। ''जीवन की व्यवस्था'' कठोरता की व्यवस्था के ऊपर विजयी हुआ।

इसी प्रकार परमेश्वर हमें एक व्यवस्था से दूसरी व्यवस्था देने के द्वारा जो पहली से ज़्यादा सामर्थ्यी है छुड़ा लेते हैं। ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था'' हमेशा से वहां है परन्तु ''मसीह में जीवन के आत्मा की व्यवस्था'' अधिक महान तथा विजय पाने में सामर्थ्य है।

मसीह यीशु का पुनरुत्थान का जीवन, पाप और मुत्यु का सामना कर उस पर विजयी होता है। (इफिसियों 1:19–20)

1 पतरस 1:5 '' तुम्हारी रक्षा परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा विश्वास से उस उद्धार के लिए की जाती है जो अन्तिम समय में प्रकट होने पर है।''

यह ''प्रयत्न'' और ''भरोसे'' के बीच के अन्तर को प्रकट करती है।
मैं, अपनी शक्ति से परमेश्वर को प्रसन्न करने का ''प्रयत्न'' नहीं करता परन्तु उस पर ''भरोसा'' करता हूं कि मुझे अपने जीवन के द्वारा शक्ति दे तथा मैं पूर्ण रीति से और आनन्द के साथ उस कार्य को करुं जिसकी अगुवाई वो मुझे देता है।

यह निष्क्रियता नहीं है ; यह अत्यंत सक्रिय जीवन है, प्रभु पर भरोसा रखना, उससे जीवन पाना, उसे अपने जीवन में ले लेना, उसे अपना जीवन मुझ में जीने देना। इफिसियों 3:14–19

जब मैं प्रयत्न करता हूं, तो ऐसा होता है जैसे कार बिना पैट्रोल के। कोई शक्ति नहीं। परन्तु जब मैं उस पर भरोसा करता हूं तो उसके पुनरुत्थान के जीवन की शक्ति है जो मुझे उसकी इच्छा पूरी करने के समर्थ बनाती है। कोई समस्या नहीं न ही पसीना बहाना।

जब हम उसके जीवन पर जो मुझ में है भरोसा करतें हैं हम पूर्णतः बदल जाते हैं। वह आप से कहेगा : '' आपकी अवाज़ बहुत ऊंची है,'' या ''यह हंसी सही नहीं थी '', या ''उस दूसरे व्यक्ति को पहले जाने दो '', या '' तुम्हारा यह कहने का उद्देश्य गलत था '' यीशु तुम में अपना जीवन जीएगा।

यह वो सहज जीवन जो मसीही जीवन है। यह सब पर प्रेम प्रकट करता है, उन पर भी जो प्रेमी नहीं हैं।

रोमियों 8:3–4 '' क्योंकि जो काम व्यवस्था, शरीर के द्वारा दुर्बल होत हुए, न कर सकी, उस काम को परमेश्वर ने किया ; अर्थात, अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में तथा पाप के लिए बलिदान होने को भेज कर, शरीर में पाप को दोषी ठहराया, जिससे कि व्यवस्था की मांग हम में पूरी हो सके जो शरीर के अनुसार नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं।''

व्यवस्था से आप परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले नहीं बन जाते क्योंकि उसके पास शक्ति नहीं और हमारा शरीर कमज़ोर है तथा पालन नहीं कर सकता।

याद रखें, यह अब उद्धार का प्रश्न नहीं रह गया, यह प्रश्न है ... परमेश्वर को प्रसन्न करने का।

अब हमारी अयोग्यता के कारण परमेश्वर दो कदम उठाते हैं :

1. परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो ''हमारे लिए पाप बना'' और ''शरीर में पाप को दोषी ठहराया।'' पाप की समस्या हट गई।
2. उसने हम में अपनी पवित्र आत्मा को भेजा ताकि जब हम आत्मा के अनुसार चलें तो व्यवस्था की मांग पूरी हो जाए।

आत्मा के पीछे चलना, आत्मा की अधीनता में चलना है।

केवल जब मैं अपने आप को उसकी आज्ञा मानने को अर्पण करता हूं तभी मैं ''जीवन के आत्मा की व्यवस्था'' पूरे कार्य में पाता हूं तथा व्यवस्था पूरी होती है, इस प्रकार परमेश्वर प्रसन्न होता है।

रोमियों 8:14 '' इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।''

''पुत्र'' = अर्थात बच्चों से अधिक परिपक्वता।

प्राकृतिक रीति में रहने के लिए, मुझे हवा में रहना चाहिए न कि पानी में।
आत्मिक रीति में रहने के लिए, मुझे आत्मा में रहना चाहिए न कि शरीर में।

मनुष्य पानी में रह और काम नहीं कर सकता।
मसीह शरीर में रह और काम नहीं कर सकता परन्तु सिर्फ आत्मा में।

''आत्मा में '' रहने का अर्थ है मैं उस पर विश्वास करता हूं कि जो आवश्यक है वह करेगा।

यह प्रयास करना नहीं, परन्तु विश्वास करना है।

यह संघर्ष करना नहीं, परन्तु उस पर भरोसा रखना है।
गलातियों 5:16–25

पाप, शैतान और मृत्यु के ऊपर अपनी विजय में वह हमारी अगुवाई करता है।

रोमियों 7:25
गलातियों 2:20
कुलुस्सियों 1:27

''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमें प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजयी करता है।''
1 कुरिन्थियों 15:57

आभार :

"Failed Yet Forgiven" Keith Lamb Lamb publishing से भाग लिए गए

मै बहुत आभारी हूं अपने पहले बाइबल शिक्षक, कीथ लैम्ब का तथा उनके द्वारा परमेश्वर के वचन की कई घंटो की उत्तम शिक्षा का।

परमेश्वर के वचन की मेरी सीमित समझ मुझे पवित्र आत्मा द्वारा सीधे प्राप्त हुई है तथा पवित्र आत्मा से अनेक लोगों के द्वारा प्राप्त हुई है।

2. विश्वास को समझना

क. परिचय

'' धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।''

जीवन के मार्ग की यह घोषणा हमें बाइबल में चार बार मिलती है :
हबक्कूक 2:1–5 ; रोमियों 1:17 ; गलातियों 3:10–11 ; इब्रानियों 10:38

यीशु मसीह में नए जन्म पाए विश्वासी के लिए, विश्वास जीवन का मार्ग है :

वह विश्वास के द्वारा बचाया जाता है :
इफिसियों 2:8–9
''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है – और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमण्ड करे।''

विश्वास के द्वारा वह बना रहता है और सुरक्षित रहता है।
1 पतरस 1:5
''तुम्हारी रक्षा परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा विश्वास से उस उद्धार के लिए की जाती है जो अन्तिम समय में प्रकट होने पर है।''

वह विश्वास द्वारा जीवित है :
गलातियों 2:20
'' मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। अब मैं जीवित नहीं रहा, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है, और अब मैं जो शरीर में जीवित हूं, तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।''

ख. विश्वास क्या है ?

पवित्र शास्त्र में विश्वास की एकमात्र परिभाषा इब्रानियों 11:1 है।

यह अत्यंत आवश्यक है कि हम इस परिभाषा को ठीक तरह से समझें।
'' विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।''

'' निश्चय'' का युनानी शब्द hupostasis __ (strong's #5287) है।

Thayer's Greek Lexicon इस शब्द को परिभाषित करते हैं :

- जमाना या स्थापन करना ; बुनियाद
- जिसका वास्तव में अस्तित्व हो ; एक निश्चय, एक वास्तविकता
- वास्तविक गुण, स्वभाव, किसी वस्तु या व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया
- मन का दृढ़निश्चय, अटल, हिम्मत, संकल्प, भरोसा, दृढ़ विश्वास, आश्वासन।

युनानी शब्द में कार्य की अनुभूति है न कि सिर्फ वस्तु या निश्चय।

जे.एन. डारबी इस पद का इस प्रकार अनुवाद करते हैं :
'' विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं को प्रमाणित करता है।''

हमें इस शब्द ''सिद्ध करना'' को समझना है।
निश्चय (संज्ञा) : जिसके पास आकार है और जगह लेती है ; पदार्थ । जिसको देखा और छुआ जा सकता है। एक विशेष प्रकार की सामग्री या संघटन। जो वास्तविक है काल्पनिक नहीं है।

सिद्ध करना (क्रिया)
1. सबूत से बल देना ; जांच करना ; अभियोग को सिद्ध करना। प्रर्यायवाची : पुष्टि।
2. क) भौतिक आकार देना : प्रस्तुत करना
   ख) दृढ़ या ठोस बनाना
3. निश्चयता देना ; वास्तविक या यथार्थ बनाना।

अतः विश्वास आशा की वस्तुओं को निश्चयता देता और उसे यथार्थ या वास्तविक (भौतिक आकार) बनाता है।

दूसरे शब्दों में :
विश्वास आशा की हुई वस्तुओं को जीवित प्रस्तुत करता है। मरकुस 11:24

2 कुरिन्थियों 4:18
'' हमारी दृष्टि उन वस्तुओं पर नहीं जो दिखाई देती है, पर उन वस्तुओं पर है जो अदृश्य हैं, क्योंकि दिखाई देनी वाली वस्तुएं तो अल्पकालिक हैं, परन्तु अदृश्य वस्तुएं चिरस्थायी हैं।''

विश्वास वस्तविकता में ले आता है, या ''उन वस्तुओं को जो अदृश्य हैं '' यथार्थ बना देता है और उन्हें दिखाई देने वाला बना देता है। याकूब 5:16–18

विश्वास ''वास्तविक वस्तुओं '' को हमारे अनुभवों में हमारे लिए यथार्थ बना देता है।

विश्वास मसीह की वस्तुओं को प्रमाणित करता या मेरे लिए वास्तविक बना देता है।

उदाहरण के लिए :
रोमियों 6:6 ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है।''

विश्वास मेरे अनुभवों में इस सत्य को वास्तविक बना देता है।

चाहे मैं इसका विश्वास न करुं, फिर भी यह सच है। यह अभी भी सत्य है। परन्तु मेरे जीवन या अनुभवों में यह वास्तविक नहीं बनता।

यदि मैं बहुत बड़ी रकम जीतता हूं और मेरा नाम की घोषणा टेलीविज़न पर होती है यह सच है, तो यह जो तथ्य है और जो कुछ मुझे करना है वो यह कि जाना और उसे प्राप्त करना है। फिर भी यदि मैं यदि विश्वास न करुं, तो भी भले ही यह सच हो फिर भी यह कभी मेरा अनुभव नहीं बन सकता।

यदि हम क्रूस की वास्तविकता पर विश्वास न करें फिर भी वो सच्चाई हमेशा की तरह रहेगी, परन्तु हमारे लिए उसका कोई मुल्य नहीं है। विश्वास की इस में आवश्यकता नहीं है इन वस्तुओं को अपने आप में वास्तविक बना दें, परन्तु विश्वास इन को प्रमाणित कर के और इन्हें हमारे अनुभवों में वास्तविक बना देता है।

यूहन्ना 17:17 ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर – तेरा वचन सत्य है।''
यूहन्ना 8:32
यूहन्ना 11:40 ''यीशु ने उस से कहा, ''क्या मैने तुझ से नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी ?''

ग. विश्वास के दो पहलु हैं :

पहला बुद्धि से सम्बन्धित है। हम क्या जानते हैं। हम क्या विश्वास करते हैं। यह बौद्धिक कायल होना है कि यीशु मसीह ही परमेश्वर है और एक मात्र उद्धारकर्त्ता है। याकूब 2:17–20 ; मरकूस 1:23–25

फिर, सत्य को जान लेने के बाद यीशु मसीह को स्वामी के रुप में समर्पित करने की इच्छा का निर्णय। इसे हम देखते हैं जब थोमा ने विश्वास किया और स्वीकार किया, ''हे मेरे प्रभु , हे मेरे परमेश्वर।''(यूहन्ना 20:28)

'' मेरे प्रभु '' – उसकी इच्छा का समर्पण
'' मेरे परमेश्वर'' – उसकी बुद्धि यह जान कर कायल हो गई कि वह कौन है।

बचा देने वाला विश्वास : (1) मन का कायल हो जाना कि यीशु ही परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता है और (2) अपने जीवन में प्रभु (स्वामी) मान कर उसके लिए इच्छा का समर्पण।

विश्वास परमेश्वर की इच्छा चाहता है बजाय इसके कि अपनी इच्छाओं या योजनाओं पर उसकी स्वीकृति देखें। यहोशु 5:13–14

उसका वचन सत्य है – वास्तविक – जीवित – सामर्थ्य पूर्ण।

घ. विश्वास प्रभु के तथा उसके वचन के प्रति पूर्ण समर्पण है

उत्पत्ति 15:6 गलातियों 3:6
यह वाचा में प्रवेश करने के लिए आवश्यक है।

उदाहरण : ऊंचे तार पर चल रहा व्यक्ति। (दो ऊंची चोटी के बीच कस कर बांधी गई तार)

ङ▪ विश्वास परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना और उसकी आज्ञाओं को मानना है

उदाहरण : उत्पत्ति 22:2, 9–18

इब्रानियों 11:6–11, 27–30
''विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना असम्भव है, क्योंकि जो कोई परमेश्वर के पास आता है, उसके लिए यह विश्वास करना आवश्यक है कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।''

यह परिकल्पना नहीं है। अनुमान लगाते हुए नहीं कि मैं इसे जानता हूं इसे कैसे करना है और मैं कर सकता हूं। उदाहरण : इस्राएलियों की ऐ में पराजय। तब उन्होंने अपने आत्म विश्वास से मन फिराया और प्रभु के वचन को खोजा।

च. विश्वास यह जान लेना है कि :

रोमियों 8:28 '' और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता है, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गए हैं।''

सच्चा विश्वास कभी भी भरोसा करना छोड़ता नहीं।
यह सब समय में विश्वासयोग्य है। इब्रानियों 10:39 लूका 22:32

छ. विश्वास समस्त तर्क–वितर्क से परे है।

- ✶ यह विश्वास करता है बिना समझे क्यों। लूका 1:38
- ✶ यह बन्दीगृह में गाता है। (प्रेरितों के काम 16:25)
- ✶ यह क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं। (रोमियों 5:3)
- ✶ यह दुख भोगना चुन लेता है। (इब्रानियों 11:25)
- ✶ यह सब कुछ परमेश्वर की इच्छा का भाग जान कर ग्रहण कर लेता है। (फिलिप्पियों 1:12)

ज. आपका जन्म इस विश्वास के साथ नहीं हुआ

यह आता है :
1. परमेश्वर का वचन सुनने से। रोमियों 10:17
   यही कारण है कि हमें हर प्राणी को सुसमाचार प्रचार करने की आज्ञा मिली है, कि वे सुनें और विश्वास करें। रोमियों 10:13–14
2. विश्वास परमेश्वर के द्वारा प्राप्त होता है। रोमियों 12:3

झ विश्वास का महत्व

इफिसियों 6:16
मसीही अस्त्र– शस्त्र का महत्वपूर्ण भाग विश्वास की ढाल है। आपको ''परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र–शस्त्र'' धारण करने हैं क्योंकि मसीही जीवन एक युद्ध है, एक आत्मिक संग्राम। पौलुस मसीही अस्त्र–शस्त्र के विभिन्न अंगों का ज़िक्र करता हुआ, ढाल पर आता है और उसके महत्व पर ज़ोर देता हुआ कहता है, ''इनके अतिरिक्त, विश्वास की ढाल को लिए रहो '' क्योंकि विश्वास की ढाल के साथ, कुछ भी आप को नुकसान नहीं पहंचा ; हम मसीह के द्वारा जयवन्त से भी बढ़कर हैं। (रोमियों 8:37)

विश्वास के महत्व को इस में देख सकते हैं कि :

1. आप विश्वास के बिना बचाए नहीं जा सकते। यूहन्ना 3:36
2. आप संसार पर जय प्राप्त नहीं कर सकते। 1 यूहन्ना 5:4
3. आप परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। इब्रानियों 11:6
4. आप प्रार्थना नहीं कर सकते। याकूब 1:6
5. आप का परमेश्वर से मेल नहीं हो सकता। रोमियों 5:1
6. आप आनन्दित नहीं हो सकते। 1 पतरस 1:8
7. विश्वास के द्वारा आप धर्मी ठहराए जाते हैं। गलातियों 2:16
8. आप को विश्वास के द्वारा जीना है। गलातियों 2:20
9. विश्वास के द्वारा आप धार्मिकता बन जाते हो। रोमियों 10:1–4
10. विश्वास के द्वारा मसीह आपके हृदय में वास करता है। इफिसियों 3:17
11. विश्वास के द्वारा हम पवित्र आत्मा ग्रहण करते हैं। गलातियों 3:2
12. जो कुछ विश्वास से नहीं, पाप है। रोमियों 14:23

विश्वास महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर का आदर करता है, ओर परमेश्वर विश्वास का आदर करता है।

ञ. अल्प विश्वास

मत्ती 14:28–33
यद्यपि पतरस ने '' बड़ा विश्वास '' प्रदर्शित किया, यीशु ने कहा उसके पास '' अल्प विश्वास '' है।

पतरस ने सही इच्छा और प्रार्थना से आरम्भ किया।
'' प्रभु , मैं तेरे पास आना चाहता हूं, जहां तू हो।''
यीशु सदा प्रार्थना का उत्तर '' चला आ '' के साथ देगा।
पतरस ने असम्भव कार्य किया, विश्वास के द्वारा वह पानी पर चला।
पतरस ने स्वाभाविक कार्य किया, तेज़ हवा को देख कर उसने अपनी आंख यीशु पर से हटा ली और संदेह करने लगा।
पतरस ने अपेक्षित कार्य किया, वह डूबने लगा।
पतरस ने सही काम किया, उसने यीशु की ओर देखा और प्रार्थना की : ''प्रभु , मुझे बचा।''
फिर पतरस ने असम्भव कार्य किया, वह पानी पर यीशु के साथ चला।

इस अध्ययन में हम ने ''अल्प विश्वास'' की सफलता और असफलता देखी।

हमें विश्वास की आवश्यकता है जो उन जीवन की आंधियों से बढ़कर है जो आप को पराजय की ओर घसीट देती है। आप बड़ा विश्वास ''प्रार्थना और उपवास'' (मत्ती 17:20–21) के द्वारा तथा परमेश्वर के वचन पर अपने विश्वास का पोषण करके (रोमियों 10:17) पा सकते हैं। आप पहाड़ को हटा सकने वाला विश्वास प्राप्त कर सकते हैं।

''अल्प विश्वास '' मत्ती 6:30 ; 8:26 ; 14:31 ; 16:8 ; 17:20

''बड़ा विश्वास '' मत्ती 8:10, 13 ; 9:22 , 29 ; 15:28 ; 21:21–22

ट. विश्वास के तीन प्रकार

यूहन्ना 11:21–44
लाज़र को जिलाने आए यीशु , मार्था के सीमित आधारिक विश्वास को अपनी एकमात्र रुकावट के रुप में पाते हैं।

मार्था का विस्वास सीमित था। उसने कहा, '' प्रभु , यदि तू यहां होता तो मेरा भाई नहीं मरता।'' लाज़र की मृत्यु का अर्थ मार्था के विश्वास का अन्त। वह विश्वास करती थी कि यीशु के पास उसके भाई को बिमारी से उठाने की सामर्थ्य है, परन्तु मृत्यु से नहीं।
सीमित विश्वास परिस्थितियों द्वारा नियंत्रित रहता है और असफलता के भय के द्वारा प्रेरित हो जाता है।

मार्था का विश्वास बुनियादी था।
यीशु ने कहा, ''तेरा भाई फिर जी उठेगा।'' यह शब्द उसके विश्वास और आशा को जागृत करने के लिए कहे गए थे।

परन्तु उसने कहा, ''मैं जानती हूं कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।'' मार्था ने इस सत्य में अपने बुनियादी विश्वास की घोषणा की, परन्तु यह आज के महान कार्यों को पूरा करने के लिए काफी नहीं है।

यीशु ने कहा, '' पुनरुत्थान और जीवन मै ही हूं।'' यीशु यह कह रहे थे कि उसके पास जीवन और मृत्यु के ऊपर सारा अधिकार है। फिर उसने पूछा, '' क्या तू इस पर विश्वास करती है ?'' मार्था ने धर्ममत में आधारित अपने बुनियादी विश्वास को व्यक्त करने के द्वारा इस प्रश्न को टाल दिया। '' हां प्रभु , मैंने विश्वास किया कि तू ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, अर्थात वही जो जगत में आने वाला था।'' धर्ममत में विश्वास करना ही काफी नहीं है ; विश्वास आपके धर्ममत से परे जाना चाहिए, जीवित और सर्व सामर्थ्यी प्रभु यीशु मसीह के पास।

मार्था के विश्वास को चुनौती
यूहन्ना 11:39 यीशु ने कब्र से पत्थर हटाने की आज्ञा दी, मार्था ने अविश्वास में उसे टोका।

पद 40 यीशु ने उससे कहा, '' क्या मैंने तुझ से नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी?'' हल्लेलुय्याह !

हम अकसर सुनते हैं '' देखने से विश्वास होता है,'' परन्तु ऐसा विश्वास के जन के साथ नहीं है। आप विश्वास करते हैं फिर देखते हैं। विश्वास आंखों के सामने आ जाता है।

मार्था कब्र से पत्थर हटाने में सहमत हो गई।

पद 43 और जब वह ये बातें कह चुका तो उसने बड़ी ज़ोर से पुकारा, '' हे लाज़र, निकल आ ! '' और लाज़र निकल आया। मरे हुओं में से जिलाया हुआ।

केवल सीमित, बुनियादी विश्वास से सन्तुष्ट न रहें जब कि आप असीमित विश्वास प्राप्त कर सकते हैं जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है और उसकी महिमा प्रकट होती है।

ठ. विश्वास का भवन

इब्रानियों 11

आप अकसर इस अध्याय को पढ़ें और मनन करें ताकि प्रभु में आपका विश्वास मज़बूत हो, क्योंकि यहां हमें इस्राएल और कलिसिया के इतिहास का दर्शन मिलता है जो सन्तों की महान उपलब्धियों में विश्वास के द्वारा लिखा गया है।

पद 4	उन्होंने हाबिल के समान विश्वास में उपासना की।
पद 5	वे हनोक के समान विश्वास द्वारा चले।
पद 7	उन्होंने नूह के समान विश्वास के द्वारा कार्य किया।
पद 8–19	वे विश्वास द्वारा इब्राहीम के समान जीए।
पद 20–22	उन्होंने इसहाक, याकूब, यूसुफ के समान विश्वास द्वारा भविष्य में होने वाली आशिष की बात कही।
पद 23–28	उन्होंने मूसा के समान विश्वास द्वारा राज किया।
पद 29	वे इस्राएल के समान विश्वास द्वारा लाल समुद्र में से पार हो गए।
पद 30	वे यहोशु के समान विश्वास द्वारा लड़े।
पद 31	दूसरी जातियों के लोगों ने रहाब के समान विश्वास के द्वारा उद्धार प्राप्त किया।
पद 32–33	उन्होंने गिदोन के समान विश्वास द्वारा राज्य जीते।
पद 33	उन्होंने दानिय्येल के समान विश्वास द्वारा सिंहों के मुंह बन्द कर दिए।
पद 34	वे तीन इब्रानी युवकों के समान विश्वास द्वारा आग में से हो कर गए।
पद 35–38	उन्होंने पौलुस के समान विश्वास द्वारा दुःख उठाया। वे स्तिफनुस के समान विश्वास द्वारा मारे गए।

इब्रानियों 11:38–40

केवल सर्वशक्तिमान प्रभु यीशु में विश्वास के द्वारा ही आप परिस्थितियों के ऊपर राज कर सकते हैं और उन सारी दुष्ट शक्तियों पर विजयी हो सकते हैं जो आपको नष्ट कर सकती हैं।

इब्रानियों 12:1–3

''इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमें घेरे हुए है, ... विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर अपनी दृष्टि लगाए रहें।''

पहले के सन्तों का विश्वास हमें प्रेरित और प्रोत्साहित करता है, जब वे ऊपर से हमें देखते हैं। परन्तु हम : ''विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर अपनी दृष्टि लगाए रहें।'' जैसा पतरस ने किया, क्योंकि ''विश्वास सुनने से , और सुनना मसीह के वचन के द्वारा होता है।''

आभार :

Master Outlines तथा पोर्टर बैरींगटन द्वारा संगृहीत नोट्स से लिए गए भाग।

3. न्याय

क. परिचय

बाइबल में पांच अलग अलग न्याय प्रकट हैं और इनका समय, स्थान और उद्देश्य भिन्न हैं। फिर भी इन सब में एक बात आम है, प्रभु यीशु मसीह न्यायी हैं।

यूहन्ना 5:22
'' क्योंकि पिता भी किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु उसने न्याय का सारा कार्य पुत्र को सौंप दिया है।''

आदम से लेकर इस जगत में पैदा होने वाला अन्तिम मनुष्य प्रत्येक न्याय के लिए प्रभु यीशु मसीह के सम्मुख खड़े होंगें।

ख. पाप का न्यायरोमियों 8:3

इस प्रथम न्याय में विश्वासी के पापों का न्याय, क्रूस पर प्रभु यीशु मसीह में किया जा चुका है।

हमारे पापों का न्याय प्रभु यीशु मसीह में क्रूस पर हो गया है तथा प्रत्येक विश्वासी '' मृत्यु से पार होकर वह जीवन में प्रवेश कर चुका है।'' यीशु ने हमारे पापों का पूरा दण्ड चुका दिया (रोमियों 6:23)। वह विश्वासी के स्थान पर दण्डित किया गया। विश्वासी का कभी पापों का न्याय नहीं होगा क्योंकि :

★ हम पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिये गए हैं क्योंकि परमेश्वर ने पाप को अपने पुत्र यीशु मसीह की देह में दण्डित किया। रोमियों 8:1–4

★ '' वह एक ही बार प्रगट हुआ कि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को मिटा दे। इब्रानियों 9:26 ; 2 कुरिन्थियों 5:19

★ विश्वासी कभी भी इस संसार के साथ दोषी नहीं ठहराया जाएगा, क्योंकि यीशु मसीह हमारे बदले में दोषी ठहरा दिए गए। 2 कुरिन्थियों 5:21

★ यीशु मसीह ने दण्ड का मुल्य चुका दिया, हमारे लिए उसकी मृत्यु के आधार पर, विश्वासी अपने अपराधों से सदा के लिए दूर कर दिया जाता है। भजन संहिता 103:12

★ विश्वासी के पाप ''मिटा दिए'' गए तथा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि ''मैं तेरे पापों को फिर स्मरण नहीं करुंगा। यशायाह 43:25

★ हमारे प्रभु ने हमारे पापों के कारण दुख उठाया, ''अधर्मियों के लिए धर्मी '' ताकि हम बचाए जाएं और न्याय में फिर कभी पापी के समान न लाए जाएं। 1 पतरस 3:18

★ विश्वासी कभी दण्डित नहीं होगा क्योंकि उसके पाप धुल गए या शुद्ध हो चुके हैं। इब्रानियों 1:3

★ यीशु क्रूस पर हमारे लिए शापित बना, और हमें '' व्यवस्था के शाप से मुल्य दे कर छुड़ाया है। गलातियों 3:13

ग. विश्वासी का अपने स्वयं को जांचने का न्याय

1 कुरिन्थियों 11:31–32 : '' यदि हम अपने आप को ठीक से जांचते तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु दण्ड दे कर हमारी ताड़ना करता है कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरायें जाएं।''

विश्वासी का अपने जीवन की बातों को जांचने से बढ़कर अपने स्वयं को जांचने का न्याय है। जब हम अपने स्वयं को जांचते हैं, तो हमारे जीवन में जो अच्छा और बुरा है वो प्रकाश में आ जाता है ; और हम बुरे को मान कर (1 यूहन्ना 1:9) उसे छोड़ (यशायाह 55:7) देते हैं।

हमें अपने जीवन में पापों को जांचना चाहिए तथा हमें अपने स्वयं को जांचना भी चाहिए।

★ स्वयं का न्याय यह जानना है '' कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कुछ भी भला वास नहीं करता।'' रोमियों 7:18

★ स्वयं का न्याय यह जान लेना है कि अपना क्रूस उठाने और यीशु का अनुसरण करने के द्वारा स्वंय को मारना है। लूका 9:23–24

★ स्वयं का न्याय अपने जीवन के बदले मसीह के जीवन को ले आना है। कुलुस्सियों 3:4 ; गलातियों 2:20

★ स्वयं का न्याय अब आत्म बोध होना ही नहीं रह गया, परन्तु मसीह बोध हो जाना है। मत्ती 28:20

★ स्वयं का न्याय अब आत्म नियंत्रण होना ही नहीं रह गया, परन्तु मसीह नियंत्रित हो जाना है। प्रेरितों के काम 9:5–6

★ स्वयं का न्याय अब स्वाभिमान खोजना ही नहीं रह गया, परन्तु दूसरे को अपनी अपेक्षा ज़्यादा मान देना। फिलिप्पियों 2:3

★ हमें स्वयं को जांचना चाहिए न कि औरों को।
यूहन्ना 8:7–11 ; मत्ती 7:1–5 ; रोमियों 14:4, 10–13

घ. विश्वासी के कार्यों का न्याय

2 कुरिन्थियों 5:10 '' क्योंकि हम सब को मसीह के न्याय – आसन के समक्ष उपस्थित होना अवश्य है कि प्रत्येक को अपने भले बुरे कामों का बदला मिले जो उसने देह के द्वारा किए।''

विश्वासी के कार्यों का न्याय ''मसीह के न्याय – आसन'' पर होगा। शब्द ''मसीह का न्याय – आसन'' बाइबल में केवल दो बार ही आता है ; परन्तु इसका उल्लेख कई बार हुआ है। यह ऊपर दी गए पद में ; तथा रोमियों 14:10 भी देखें। दोनों पदों को ध्यानपूर्वक सन्दर्भ के साथ देख कर यह प्रकट होता है कि केवल विश्वासी ही ''मसीह के न्याय – आसन'' पर उपस्थित होंगे। उनके कार्यों का न्याय होगा न कि उनके पापों

का, क्योंकि जैसा हम पहिले भी देख चुके हैं कि विश्वासी के पापों का न्याय मसीह में क्रूस पर हो चुका है, और ''अब उन पर जो मसीह में हैं, दण्ड की आज्ञा नहीं है।'' रोमियों 8:1

★ यह न्याय ''हवा में'' होगा, पहिले पुनरुत्थान के पश्चात। ''जो मसीह में मर गए हैं, वह पहिले जी उठेंगे।'' 1 थिस्सलुनीकियों 4:14–18

★ उद्धार पाए और बिना उद्धार पाए हुओं के पुनरुत्थान के मध्य 1000 वर्षों का अन्तर होगा (प्रकाशितवाक्य 20:4–5), तथा ''मसीह के न्याय – आसन'' में जहां बचाए गए लोग उपस्थित होंगे और ''न्याय का बड़े श्वेत सिंहासन'' में जहां केवल वे जो बचाए नहीं गए उपस्थित होंगें के मध्य हज़ार वर्ष का अन्तर होगा।

★ मसीह के न्याय – आसन पर, विश्वासी अपने कार्यों का लेखा परमेश्वर को देगा। इसलिए, हम अपने कार्य को देखें न कि दूसरे के कार्यों का न्याय करें (रोमियों 14:10–13)

★ यह बहुत ही नम्र कर देने वाले विचार हैं कि एक दिन विश्वासी अपने सब कार्य को देखेगा – ''अच्छा या बुरा''। तथा ''हर निकम्मी बात का लेखा देगा''(मत्ती 12:36–37)। कुछ लज्जित होंगे (1 यूहन्ना 2:28) और ''हानि उठाऐंगे'' – उद्धार की हानि नहीं, परन्तु प्रतिफल की हानि (1 कुरिन्थियों 3:11–15)। अतः जो कुछ करो, परमेश्वर की महिमा के लिए करो। कुलुस्सियों 3:17

ड▪ जातियों का न्याय
मत्ती 25:31–46

यह न्याय, बड़े श्वेत सिंहासन वाला न्याय (प्रकाशितवाक्य 20:11–15) नहीं है। सावधानी पूर्वक दोनो का मिलान करने पर निम्नलिखित तथ्य स्थापित होते हैं :

★ जातियों का न्याय तब होगा '' जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा ... ...तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान होगा।'' बड़े श्वेत सिंहासन को कभी भी ''महिमामय सिंहासन नहीं बोला गया। (प्रकाशितवाक्य 20:11–15)

★ इस न्याय में, समस्त जीवित जातियों का न्याय होगा (योएल 3:11–16)। बड़े श्वेत सिंहासन पर, वह मरे हुए दुष्ट लोगों का न्याय करेगा।

★ इस न्याय में, मरे हुओं का पुनरुत्थान नहीं है। बड़े श्वेत सिंहासन पर, समस्त मरे हुए दुष्ट जिलाए जाएंगे : ''समुद्र ने उस मृतकों को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने अपने मृतक दे दिए।''(प्रकाशितवाक्य 20:13)

★ इस न्याय में, परमेश्वर ''राजा'' न्यायी है जो अपने जगत के राज्य में सब जतियों का न्याय कर रहा है। बड़े श्वेत सिंहासन में परमेश्वर न्यायी है, जो केवल मरे हुए दुष्टों का न्याय कर रहा है।

★ इस न्याय में, पुस्तकें नहीं खोली गई। बड़े श्वेत सिंहासन पर पुस्तकें खोली गई।

★ इस न्याय में, तीन वर्गों का न्याय होगा : ''भेड़'' – उद्धार पाए हुए (प्रकाशितवाक्य 7:9–17) ; ''बकरी '' – जिन्होंने उद्धार नहीं पाया (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–10) ; ''भाईयों '' – इस्राएल के चुने हुए (प्रकाशितवाक्य 7:1–8 ; रोमियों 11:25–28) । बड़े श्वेत सिंहासन पर केवल एक ही वर्ग होगा : ''मृतक दुष्ट''

★ इस न्याय में, राजा उन को राज्य देगा जिनके पास अनन्त जीवन है। बड़े श्वेत सिंहासन में न तो कोई बचाया हुआ है और न ही कोई राज्य ; वे सब ''आग की झील में फेंक दिए जाएंगे।''

च दुष्टों का न्याय

प्रकाशितवाक्य 20:11–15 यूहन्ना 5:24

'' बड़ा श्वेत सिंहासन '' मसीह के हज़ार वर्षों के राज के पश्चात होगा। यह अन्तिम न्याय है, तथा इसमें केवल मरे हुए दुष्टों का ही न्याय होगा। प्रकाशितवाक्य 20:5 के अनुसार, विश्वासीयों का पुनरुत्थान इस न्याय के हज़ार वर्षों पूर्व हो चुका होगा, तथा उनके कार्यों का न्याय '' मसीह के न्याय आसन '' पर होगा। (2 कुरिन्थियों 5:10)

★ इस न्याय में, न्यायी प्रभु यीशु मसीह का मुख देख कर मृतक दुष्ट भाग कर छुपने का स्थान ढूंढेंगे। परन्तु उन्हें कोई स्थान नहीं मिलेगा।

★ इस न्याय में, ''छोटे बड़े सब मृतक'' परमेश्वर के समक्ष खड़े होंगे। परन्तु ''बड़े '' की महानता का कोई महत्व न होगा। ''कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।'' रोमियों 3:12

★ इस न्याय में, प्रत्येक मृतक का न्याय ''उसके कामों के अनुसार किया जाएगा।'' परमेश्वर न्यायी परमेश्वर है, और क्योंकि नरक में दण्ड की श्रेणीयां होंगी, इसलिए कुछ को अन्य से अधिक दण्ड मिलेगा। (लूका 12:42,48)

★ इस न्याय में, कोई दोषमुक्त नहीं होगा, इससे बढ़कर कोई और अदालत नहीं जहां हारे हुए अपील कर सकें। यह नष्ट होना, सदा के लिए नष्ट हो जाना है। यह अनन्त काल के लिए नरक मे जाना है, और वह भी बिना आशा के। नरक है (लूका 16:19–31) ; तथा नरक में, कोई आशा नहीं, कोई तरस खाने वाला नहीं।

आभार :

The Christian Life New Testament ; प्रकाशक : थोमस नेल्सन ; अध्ययन रुपरेखा।

4. प्रतिफल

क. परिचय

उद्धार ''परमेश्वर का दान है, यह कार्यों के द्वारा नहीं (इफिसियों 2:8–9) तथा इसे हम प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूरे किए कार्य पर विश्वास करने के द्वारा पाते हैं (यूहन्ना 3:36)। विश्वासी को उसके कार्यों के अनुसार प्रतिफल मिलेगा (मत्ती 16:27)।

1 कुरिन्थियों 3:8–15

पहला, प्रत्येक विश्वासी अपने परिश्रम के अनुसार प्रतिफल पाएगा (पद 8)। हम उद्धार के लिए परिश्रम नहीं करते।

दूसरा, ''हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं '' (पद 9) – उद्धार के लिए नहीं प्रतिफल के लिए।

तीसरा, विश्वासी को प्रभु यीशु मसीह पर निर्माण करना है (पद 11)।

चौथा, विश्वासी के पास दो प्रकार की निर्माण सामग्री का विकल्प है, ''सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर'' से – यह अनन्त सामग्री से निर्माणकरना है ; या '' काठ और घास – फूस '' से – यह अस्थायी निर्माण सामग्री से निर्माण करना है (पद 12)। 2 कुरिन्थियों 4:18

विश्वासी जो अनन्त सामग्री ''सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर'' से प्रभु यीशु पर निर्माण करते हैं, प्रतिफल पाएंगे। जो अस्थायी सामग्री, '' काठ और घास – फूस '' से प्रभु यीशु मसीह पर निर्माण करते हैं, प्रतिफल नहीं पाएंगे। '' काठ और घास – फूस '' के कार्य ''मसीह के न्याय आसन '' के सामने नष्ट हो जाएंगे, और विश्वासी हानि उठाएगा – उद्धार की हानि नहीं, परन्तु अनन्त प्रतिफल की हानि।

''मसीह के न्याय आसन '' के समक्ष कुछ विश्वासी लज्जित होंगे (1 यूहन्ना 2:28), अपने '' काठ और घास – फूस '' के कार्य से लज्जित। प्रकाशितवाक्य 3:11

ख. जीवन का मुकुट याकूब 1:12

यह प्रतिफल उनके लिए है जो प्रभु से प्रेम करते हैं। विश्वासी परिक्षाओं पर विजय तथा क्लेशों को सहने की शक्ति परमेश्वर के प्रेम के द्वारा पाता है। पौलुस ने कहा, '' हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं।'' तथा ''पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उंडेला गया है।'' (रोमियों 5:3–5)। तथा ''प्रेम कभी मिटता नहीं।''

सब विश्वासीयों के पास अनन्त जीवन है (यूहन्ना 3:15–16)

सब विश्वासीयों को ''जीवन के मुकुट'' के साथ प्रतिफल मिलेगा।

सभी सच्चे विश्वासी ''प्राण देने तक विश्वासी रहेंगे।'' (प्रकाशितवाक्य 2:10)

ग. विजेता का मुकुट 1 कुरिन्थियों 9:24–27

पौलुस ने विश्वासी की आत्मिक दौड़ का चित्रण करने के लिए यूनानी खेलों का उदाहरण दिया। वे ''नष्ट होने वाले मुकुट की प्राप्ति के लिए दौड़ते हैं , परन्तु हम नष्ट न होने वाले मुकुट के लिए'' दौड़ते हैं। कोई भी व्यक्ति इन खेलों में जब तक भाग नहीं ले सकता था जब तक वह यूनानी मां बाप से जन्मा, यूनानी नागरिक न हो। कोई भी व्यक्ति जिसका उद्धार नहीं हुआ प्रभु की सेवकाई के प्रतिफल में भाग नहीं ले सकता ; केवल वे जो परमेश्वर से जन्में हैं इसके योग्य हैं।

जिस प्रकार खिलाड़ी को अनेक अच्छी वस्तुओं का त्याग करना पड़ता है, इसी प्रकार विश्वासी भी अपनी देह को यन्त्रणा देकर वश में रखे, नहीं तो वह अयोग्य ठहरेगा। वह अपना उद्धार तो नहीं खोएगा, परन्तु ''नष्ट न होने वाला मुकुट'' खो देगा।

- ★ विश्वासी को हर उन बातों से अपना इन्कार करना चाहिए जो उसे नीचे गिराए और रोके रहे। इब्रानियों 12:1
- ★ विश्वासी को बिना दाएं या बाएं देखे, अपनी दृष्टि मसीह की ओर लगाए रखना चाहिए। इब्रानियों 12:2 ।
- ★ विश्वासी को प्रभु के सामर्थ्य की शक्ति में बलवान बनना चाहिए। इफिसियों 6:10–18 ।
- ★ विश्वासी को सब कुछ वेदी पर अर्पित कर देना चाहिए। रोमियों 12:1–2
- ★ विश्वासी को, विश्वास के द्वारा हर एक बात जो उसके आत्मिक उन्नति में बाधा उत्पन्न करे, अस्वीकार कर देना चाहिए। इब्रानियों 11:24–29 ।

केवल किनारे खड़े हो कर दौड़ न देखें। दौड़ में शामिल हो जाएं और ''नष्ट न होने वाले मुकुट'' को जीतने के लिए दौड़ें।

घ. उल्लास का मुकुट 1 थिस्सलुनीकियों 2:19–20

प्रभु यीशु मसीह के लिए लोगों को जीतने के लिए ''उल्लास का मुकुट'' है। प्रभु के लिए सबसे महान कार्य करने का सौभाग्य यह है कि आप दूसरों को यीशु मसीह के ज्ञान में ले कर आएं कि वह उनका निजी उद्धारकर्त्ता हो।

स्वर्ग में हमारा आनन्द, उन लोगों के द्वारा निर्धारित की जाएगी जिन्हें मसीह के पास लाने में हमने सहायता की है। पौलुस थिस्सलुनीकियों के विश्वासी को बताता है कि वे उसकी ''आशा, या आनन्द या उल्लास का मुकुट हैं, '' अब और जब मसीह आएगा।

- ★ मसीह के लिए आत्माओं को जीतना बुद्धिमानी है। (नीतिवचन 11:30)
- ★ मसीह के लिए लोगों को जीतना, पाप के विरुद्ध कार्य है। (याकूब 5:20)
- ★ यह स्वर्ग में आनन्द का कारण है। (लूका 15:10)

★ यह अनन्तकालीन लाभदायक है कि उसका ख़ज़ाना उस तक पहुंचा दें। मत्ती 13:44

★ अपने जीवन से गवाह बनें – ऐसा जीऐं कि दूसरे लोग, यीशु को आप में देख सकें। (प्रेरितों के काम 1:8 ; गलातियों 2:20)

★ अपने वचनों से गवाह बनें – यह भरोसा रखते हुए कि पवित्र आत्मा आप को वह शब्द देगा जो आपको बोलना चाहिए। (लूका 12:11–12 ; 21:15)

★ दशमांश और भेंटों के द्वारा गवाह बनें कि दूसरे लोग मिशनरी बन कर प्रभु के लिए जाएं तथा आपके '' लेखों में फल (प्रतिफल) लाभ के लिए भरपूरी से बढ़े।'' (फिलिप्पियों 4:15–17 ; 2 कुरिन्थियों 9:6)

★ परमेश्वर का यह वायदा है कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 15:58)

★ वह जो दूसरों को मसीह के निकट ला रहा है, अकेला आनन्दित न होगा – जब वह ''उल्लास का मुकुट'' पाएगा, तब सारा स्वर्ग उसके साथ आनन्दित होगा। (यूहन्ना 4:36)

ङ धार्मिकता का मुकुट

2 तीमुथियुस 4:5–8

''धार्मिकता का मुकुट'' प्रतिफल है, तथा इसे ''परमेश्वर की धार्मिकता'' न समझ लें, जिसे विश्वासी तब प्राप्त करता है जब वह मसीही विश्वासी बन जाता है ; क्योंकि उस समय, विश्वासी ''उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाता है।'' (2 कुरिन्थियों 5:21)। यह बचाने वाली धार्मिकता, वरदान है जो तब प्राप्त होती है जब कोई विश्वास करता है।

''धार्मिकता का मुकुट'' उद्धार पाए विश्वासी द्वारा अर्जित प्रतिफल है। यदि विश्वासी मसीह के आगमन के सिद्धान्त को पसन्द करता व उसकी बाट जोहता है, तो यह उसके पूरे जीवन को प्रभावित करेगी। वह खोए हुओं को जीतने का कठिन परिश्रम करेगा। (मत्ती 24:14)

आइये इस सत्य के प्रभावशाली असर को देखें जो प्रेरित पौलुस के जीवन पर पड़ा। वह कह सका :

★ '' मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं '' (पद 7 ; 1 कुरिन्थियों 15:32)
अपने मसीही जीवनकाल में वह आत्मिक युद्ध लड़ता रहा, और विजयी हुआ। उसने कभी धार्मिकता के शत्रुओं के सामने घुटने नहीं टेके। इफिसियों 6:12

★ '' मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है '' उसकी यात्रा का मार्ग था, करने का कार्य था। कठिन स्थानों पर जाना उसने टाला नहीं ; न ही उसने कभी पीछे मुड़ कर देखा। (लूका 9:61–62)
उसने अपनी दौड़ मसीह पर दृष्टि लगाए पूरी की। (फिलिप्पियों 1:6)

★ ''मैंने विश्वास की रक्षा की है।'' उसने परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा का प्रचार किया – कभी किसी महान सिद्धान्त का विश्वासघात नहीं किया (प्रेरितों के काम 20:24–31)। प्रेरित ने सामने '' मसीह के न्याय आसन'' को देखा जहां उनको ''धार्मिकता का मुकुट'' प्राप्त होगा जो ''उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं।''

विश्वासी के लिए यह कितना महत्वपूर्ण हैं कि अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन की ओर प्रेमी हृदय से देखें ताकि वह ''धार्मिकता का मुकुट प्राप्त करे।''

च महिमा का मुकुट

1 पतरस 5:2–4

''महिमा का मुकुट'' विश्वासयोग्य तथा आज्ञाकारी – पास्टरों के लिए है एक विशेष प्रतिफल है। उसको यह प्रतिफल तब प्राप्त होगा जब '' प्रधान रखवाला प्रकट होगा।''

यह अनन्त है ; यह ''अजर'' है। पास्टर यह ''महिमा का मुकुट'' इसके द्वारा अर्जित कर सकते हैं :

★ परमेश्वर के झुण्ड का पोषण करना। उसको परमेश्वर का वचन बिना भय या पक्षपात के सुनाना चाहिए ; और जब आवश्यक हो तब वह ''बड़े धैर्य से शिक्षा देते हुए ताड़ना दे, डांटे तथा समझाये।'' (2 तीमुथियुस 4:2–5)

★ कलिसिया की आत्मिक अगुवाई करे। पास्टर कलिसिया में लोगों को सुनाए गए संदेश के लिए परमेश्वर के प्रति जिम्मेवार है। कोई पास्टर लोगों को प्रसन्न करने के लिए प्रचार न करे ; उसे अपने परमेश्वर को प्रसन्न करना है (गलातियों 1:10)

★ कलिसिया के लिए उदाहरण बने। वह धन के लोभ में सेवा न करें। फिर भी, यह कलिसिया की जिम्मेवारी है कि उसकी प्रत्येक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करें (1 तीमुथियुस 5:18) । उसे आत्मिक अगुवा होना है न कि तानाशाह। उसे परमेश्वर के साथ विश्वास के साथ चलना चाहिए। ''जब प्रधान रखवाला प्रकट होगा तो तुम अजर महिमा का मुकुट पाओगे।''

आभार :
कुछ भाग "The Christian Life New Testament, Thomas Nelson, Publishers" से लिए गए हैं।

5. दुःखभोग

क. परिचय

यूहन्ना 16:33 ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है।''

कष्ट – परेशानी – दुःख – सताव – दबाव

प्रेरितों के काम 14:22 ''चेलों के मनों को स्थिर करते और विश्वास में स्थिर बने रहने के लिए यह कह कर प्रोत्साहित करते रहे, '' हमें बड़े क्लेश उठा कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है।''

ख. पाप से दुःख भोग

1. मनुष्य अपने तथा दूसरों के लिए दुःख लाता है

भ्रष्टाचार – झूठ धोखा – चोरी – कत्ल – हिंसा – बन्दूकें – बम्ब – भूमिगत विस्फोटकों का जाल – ज़हर – यातना – बलात्कार – कौटुम्बिक व्यभिचार – द्वेष – इत्यादि ।

यिर्मयाह 17:9 '' मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखेबाज़ होता है, और असाध्य रोग से ग्रस्त है।''

इब्रानियों 3:7–19 '' कहीं ऐसा न हो कि तुम में से कोई व्यक्ति पाप के छल में पड़ कर कठोर हो जाए।''

आज संसार में सब दुःखों की जड़ पाप में है।

प्रत्येक मनुष्य की नसों में पाप का ज़हर / विष है जो उसको दुख और मृत्यु देती है और फिर वह दुख और मृत्यु दूसरों के लिए लाता है।

क्रूस हमारे पापों के विशाल आकार को दर्शाता है। यीशु सब के द्वारा महान, ज्ञानी, अच्छा, शुद्ध, निर्दोष जन के रुप में पहचाने गए। फिर भी मनुष्य ने उसके जीवन को सबसे क्रूरतम् उपाय के साथ बुझा दिया।
पाप जो करता है वो यह है ।

'' जो बुरे को भला कहते हैं।'' (यशायाह 5:20) बरअब्बा को छोड़ दो।

2. पाप शैतान का राज्य है, जहां उसका शासन है।

★ 2 तीमुथियुस 2:26 ''सचेत हो कर शैतान के फन्दे से बच निकलें, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा है।''

★ इफिसियों 2:1–10 '' तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिनमें तुम पहिले इस संसार की रीति और आकाश में शासन करने वाले अधिकारी अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है। उन्हीं में हम सब भी पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, शारीरिक तथा

पूरा करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। परन्तु परमेश्वर ने ... ..."

★ बाहर निकलने का रास्ता – विश्वास, यीशु मसीह तथा उसके बलिदान और कलवरी क्रूस पर रक्त बहाए जाने के प्रति समर्पण। आज्ञा मानना – 1 पतरस 1:14–15 " आज्ञाकारी बच्चों के सदृश ... ... पवित्र बनों।"
पद 22 ; 2:1–2

★ उदाहरण : मेरा मित्र ज़हरीले सांप के द्वारा काटा गया।

3. जब मैने पाप करना चुना, तब मैने शैतान के राज्य में प्रवेश किया, तथा उसके पास मुझ पर आक्रमण करने का वैध अधिकार है।

★ शैतान लगातार हमें पाप के द्वारा अपने राज्य में लाने के लिए लुभाता रहता है।

2 कुरिन्थियों 11:13–15 " ... ... क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है। इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवक होने का रुप धारण करते हैं तो इसमें कोई आश्र्चय नहीं, और उनका अन्त उनके कार्यों के अनुसार होगा।"

यूहन्ना 8:44 " तुम अपने पिता से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ ही से हत्यारा है ... सत्य उसमें है ही नहीं ... वह झूठा है और झूठ का पिता है।"

प्रकाशितवाक्य 12:9 " वह बड़ा अजगर ... पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और जे सम्पूर्ण संसार को भरमाता है।"

1 यूहन्ना 5:19 " सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।"

★ शैतान ने यीशु को भी बहकाना, लुभाना, धोखा देना चाहा। लूका 4:1–13

यूहन्ना 14:30 " इस संसार का शासक आ रहा है, और उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं।" वे जो उसके हैं उसे वैध अधिकार देतें हैं।

★ शैतान ने पतरस को घमण्ड के द्वारा बहकाया तथा धोखा दिया। (लूका 22:24)

लूका 22:31 " हे शमौन, देख! शैतान ने तुम लोगों को गेंहूं के समान फटकने के लिए आज्ञा मांग ली है।"

उसका कुछ पतरस में था। कुछ चीज़ जो उसकी है तथा उसे वैध अधिकार देती है ... घमण्ड।

★ 2 कुरिन्थियों 2:9–11 "क्षमा करो ... कि शैतान हमसे कोई लाभ न उठाए, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं हैं।"

मत्ती 18:21–35 "...उसे यातना देने वालों को सौंप दिया ... "

★ बिमारी

लूका 13:11,16 "एक दुष्टात्मा ने रोग – ग्रस्त कर रखा था ... जिसे शैतान ने अठारह वर्षों की लम्बी अवधि

तक बांध रखा रखा था।''

यूहन्ना 5:5,14 '' वहां एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से बिमार था ... फिर कभी पाप न करना, ऐसा न हो कि इससे भी कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।''

उदाहरण : (मेरी मां)

★ इफिसियों 4:22–32 '' शैतान को अवसर न दो।''

उसको वैध अधिकार न दो। जैसे झूठ, क्रोध, चोरी, गन्दे शब्दों से।

★ 2 तीमुथियुस 2:26 '' ... शैतान के फन्दे से बच निकलें, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए बन्दी बना रखा है।''

उदाहरण : खरगोश को कैसे पकड़ा जाए ?

★ गलातियों 6:7–8 '' धोखा न खाओ : परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा। क्योंकि वह जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा ; परन्तु वह जो पवित्र आत्मा के लिए बोता है, वह पवित्र आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।''

★ नीतिवचन 13:21 ''विपत्ति पापियों का पीछा करती है, परन्तु धर्मियों को प्रतिफल में सुख – समृद्धि मिलती है।''

★ इससे बाहर निकलने का रास्ता या इससे कैसे बचना है :

याकूब 4:7–8 ''इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ। शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो। और हे दुचित्तों, अपने हृदयों को पवित्र करो।''

मत्ती 5:25–30 पाप के गंभीर परिणाम।

मत्ती 26:41 '' जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परिक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है।''

लूका 11:21–22 '' जब एक बलवन्त मनुष्य पूर्णतः हथियार बांधे अपने घर की रखवाली करता है तो उसकी सम्पत्ति सुरक्षित रहती है। पर जब उससे भी बलवन्त कोई व्यक्ति उस पर आक्रमण करके उसे पराजित करता है तो वह उसके समस्त हथियारों को जिन पर उसे भरोसा था छीनता और सम्पत्ति को लूट कर बांट देता है।''

धोखा दे कर / परिक्षा कर / कामुकता में बहका कर : शैतान आक्रमण करता है।

इब्रानियों 12:15 ''ध्यान रखो कि कोई परमेस्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट का कारण न बनें, जिससे कि बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।''

मरकुस 11:25 ''और जब कभी तुम खड़े हो कर प्रार्थना करो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध है तो क्षमा करो।''

रोमियों 6:6–7 , 13,16–19

यहोशु 24:15 ''आज ही चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे : उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पूर्वज फरात नदी के उस पार करते थे, या एमोरियों के देवताओं की जिनके देश में तुम रहते हो। परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा करुंगा।''

इब्रानियों 11:25 '' उसने पाप के क्षणिक सुख की अपेक्षा परमेश्वर की प्रजा के साथ दुख भोगना ही अच्छा समझा।''

ग. पापियों से दु:खभोग

धार्मिकता के जीवन का परिणाम

1. जब मै अपने जीवन और शब्दों के द्वारा क्रूस का प्रचार करता हूं।

★ मत्ती 5:10–12 ''धन्य है वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं ...।''

★ 2 तीमुथियुस 3:12 ''वे सब, जो भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, सताए जाएंगे।''

★ इब्रानियों 11:25 '' उसने पाप के क्षणिक सुख की अपेक्षा परमेश्वर की प्रजा के साथ दुख भोगना ही अच्छा समझा। उसने मसीह के कारण निन्दित को मिस्र के धन के भण्डारों की उपेक्षा बढ़कर समझा।''

★ इब्रानियों 12:2–3

★ फिलिप्पियों 1:29 ''क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि तुम उस पर केवल विश्वास ही न करो वरन् उसके लिए कष्ट भी सहो।''

★ प्रेरितों के काम 8:1–4 ''कलिसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ।'' क्योंकि उन्होंने यीशु का प्रचार किया।

- ✧ प्रेरितों के काम 5:41 ''आनन्द मनाते चल दिए कि उसके नाम के लिए वे अपमान सहने के योग्य तो ठहरे।''
- ✧ प्रेरितों के काम 7:58 स्तिफनुस का पथराव
- ✧ प्रेरितों के काम 9:16 ''मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिए उसे कितना दुख सहना पड़ेगा।''
- ✧ 2 कुरिन्थियों 11:23–33 पौलुस का दुख उठाना
- ✧ इब्रानियों 11:33–39 संसार उनके योग्य नहीं था।

★ 1 पतरस 2:20–24 '' तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख सहा और तुम्हारे लिए एक आदर्श रखा कि तुम भी उसके पद चिन्हों पर चलो। उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। उसने गाली सुनते हुए गाली नहीं दी, दुख सहते हुए धमकियां नहीं दी, पर अपने आप को उसके हाथ सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है।''

★ 1 पतरस 3:10–17 '' ... यदि धार्मिकता के लिए कष्ट सहो तो तुम धन्य हो ... क्योंकि यदि परमेश्वर की इच्छा यही हो तो उत्तम यह है कि तुम उचित काम करने के लिए दुख उठाओ, न कि अनुचित काम के लिए।''

★ 1 पतरस 4:13, 16–19 ''परन्तु जैसे जैसे तुम मसीह के दुखों में सहभागी होते रहते हो, आनन्दित रहो ... यदि कोई मसीही होने के कारण दुख उठाता है, तो वह लज्जित न हो, वरन् अपने इस नाम के लिए परमेश्वर की महिमा करें ... इसलिए वे भी जो परमेश्वर के इच्छानुसार दुख उठाते हैं , उचित कार्य करते हुए अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता के हाथों में सौंप दें।''

2. हम युद्ध पर हैं। युद्ध का परिणाम दुख उठाना है।

★ इफिसियों 6:10–18
★ मत्ती 11:12 '' स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है''
★ प्रेरितों के काम 14:22 ''हमें बड़े क्लेश उठा कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है।''

घ. दु:खभोग जिनका प्रयोग परमेश्वर करता है

जिन समस्याओं का आप सामना करते हैं वे या तो आप को पराजित कर देगी या विकसित कर देगी, यह इस पर निर्भर करता है कि आपकी प्रतिक्रिया कैसी होगी। दुर्भाग्य से अधिकतर लोग यह देखने में असफल रहते हैं कि परमेश्वर कैसे इन समस्याओं को उनके जीवन के भले के लिए इस्तमाल करना चाहता है। वे मूर्खतापूर्ण प्रतिक्रिया करते है और अपनी समस्याओं पर कुढ़ते हैं बजाय इसके कि रुक कर विचार करें कि इससे उन्हें क्या लाभ मिल सकता है। परमेश्वर अकसर इन समस्याओं का इस्तमाल आपके जीवन में करता है।

नीतिवचन 6:23 ''क्योंकि आज्ञा तो दीपक, और शिक्षा ज्योति है , और शिक्षा के लिए ताड़ना जीवन का मार्ग है।

1. हमारे विश्वास और निष्ठा को परखने के लिए

परमेश्वर समस्याओं का प्रयोग आपको जांचने के लिए करता है। लोग टी बैग (चाय की थैली) के समान हैं ... यदि आप जानना चाहते हैं कि उसके अन्दर क्या है, बस उसे गरम पानी में डाल दें। क्या कभी परमेश्वर ने आपके विश्वास की परख समस्या से की है? समस्याऐं आपके बारे में क्या प्रकट करती है?

★ याकूब 1:2–3 '' जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो, यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।

★ याकूब 1:12–15 ''धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि खरा निकल कर वह जीवन का मुकुट को प्राप्त करेगा।''

★ 1 पतरस 1:6–7 ''इस से तुम अति आनन्दित होते हो, भले ही तुम्हे अभी कुछ समय के लिए विभिन्न परीक्षाओं के द्वारा दुख उठाना पड़ा हो कि तुम्हारा विश्वास – जो आग में ताए हुए नश्वर सोने से भी अधिक बहुमूल्य है – परखा जा कर यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, महिमा, और आदर का कारण ठहरे।

★ प्रकाशितवाक्य 2:10 '' जो क्लेश तू सहने पर है उनसे न डर। देखो, शैतान तुम में से कितनों को बन्दिगृह में डालने पर है कि तुम परखे जाओ, और तुम्हे दस दिन तक क्लेश उठाना पड़ेगा। प्राण देने तक विश्वासी रह – तब मैं तुझे जीवन का मुकुट प्रदान करुंगा।''

जंगल में ले जाने का उद्देश्य व्यवस्थाविवरण 8

2. सेवकाई में हमें सिद्ध करने के लिए।

परमेश्वर समस्याओं का इस्तमाल हमें सिद्ध करने के लिए करता है। जब हम समस्याओं को सही ढंग से लेते हैं, तो यह हमारे चरित्र का निर्माण करती है। परमेश्वर को आपके आराम से अधिक आप के चरित्र में रुची है। परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध तथा आपका चरित्र यह वो दो चीज़ें हैं जो आप अनन्त काल में ले कर जा रहे हैं :

★ रोमियों 5:3–4 ''हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं ... यह हमें धैर्य रखना सिखाते हैं। तथा धैर्य से खरा चरित्र, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है।''

★ इब्रानियों 2:10 ''क्योंकि जिसके लिए और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसके लिए यह उचित था कि बहुत से पुत्रों को महिमा में लाने के लिए उनके उद्धार के कर्त्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।''

★ इब्रानियों 5:8 ''पुत्र होने पर भी उसने दुख सह सह कर आज्ञा पालन करना सीखा।''

उसने मनुष्यों के द्वेष, अविश्वास, नासमझी को सहा। इसके द्वारा वह मनुष्यों का उद्धारकर्त्ता बनने के लिए पूर्णतः तैयार हो गया। उसने हमारे कष्टों में प्रवेश किया। उसने हमारे दुखों को बांटा। इस कारण हम सेवकाई के अपने कार्य में तथा दूसरों की सेवा के लिए सिद्ध किये जाते हैं। यह हम में नैतिक व आत्मिक विजय को उत्पन्न करता है जहां हम अपनी देह पर निर्भर न रहते हुए, उसकी शक्ति में खड़े हो सकते हैं। अनुभव सबसे अच्छा शिक्षक है, परन्तु इसकी फीस बहुत ऊंची है।

★ 1 पतरस 4:1–2 '' इसलिए, जबकि मसीह ने शरीर में दुख उठाया तो तुम भी इसी अभिप्राय से हथियार धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुख उठाया है, वह पाप से छूट गया है। इसलिए शरीर में अपना शेष जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं में नहीं, वरन् परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत करो।''

★ 1 पतरस 5:8–10 '' ... तुम्हारे थोड़ी देर यातना सहने के पश्चात सारे अनुग्रह का परमेश्वर जिसने तुम्हे मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया – वह स्वयं ही तुम्हे सिद्ध, दृढ़, बलवन्त और स्थिर करेगा।''

याकूब 1:2–4 ; 5:8–11 '' जब तुम विभिन्न परीक्षाओं का सामना करते हो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो, यह जानते हुए कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा कार्य करने दो कि तुम पूर्ण तथा सिद्ध हो जाओ, जिससे कि तुम में किसी बात की कमी न रहे।'' ''भाइयों, यातना और धैर्य के लिए भविष्यद्वक्ताओं को आदर्श समझो, जिन्होंने प्रभु के नाम से बातें की थीं। देखो, धैर्य रखने वालों को हम धन्य समझते हैं। तुमने अय्यूब के धैर्य के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु के व्यवहार के परिणाम को देखा है कि प्रभु अत्यन्त करुणामय और दयालु है।''

★ रोमियों 5:3–4 '' इतना ही नहीं, परन्तु हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं, क्योंकि यह जानते हैं कि क्लेश से धैर्य उत्पन्न होता है, तथा धैर्य से खरा चरित्र, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है।

3. दूसरो की सेवा के लिए हमें तैयार करने के लिए

परमेश्वर समस्याओं का इस्तमाल आपको निदेश देने के लिए करता है। कई बार परमेश्वर आपके नीचे आग जला देता है कि आप चलें। समस्याऐं अकसर हमें नई दिशा की ओर निर्देश देती है तथा हमें बदलाव के लिए प्रेरित करती है। क्या परमेश्वर आपका ध्यान अपनी ओर चाहता है ?

★ यदि हमें दण्ड दिया जाए तो हम बुरा करना छोड़ देते हैं। दर्द मनुष्य का परिवर्त्तन कर सकता है। (नीतिवचन 20:30)

★ 2 कुरिन्थियों 1:3–5 '' धन्य है परमेश्वर, हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता, जो दयालु पिता और समस्त शान्ति का परमेश्वर है। वह हमें हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है कि हम भी उनको जो क्लेश में हों वैसी शान्ति दे सकें जैसी परमेश्वर ने स्वयं हमको दी है। क्योंकि जैसे मसीह के दुख हमारे लिए अधिकाई से हैं, वैसे ही हमारी शान्ति भी मसीह के द्वारा अधिकाई से है।''

★ परमेश्वर की शान्ति के बिना दुख उठाना आत्मा में अत्यंत कड़वाहट ला सकती है। इस लिए हमें बहुत सावधान रहना चाहिए जब हम लोगों से मिलते जुलते हैं। यदि हम उन्हें अपने दिमाग से कुछ सलाह देते हैं, और अपने अनुभवों से परमेश्वर की शान्ति नहीं देते, तो हम उनके कड़वाहट को और अधिक बढ़ा देते हैं। उनकों दुख में परमेश्वर की शान्ति की आत्मा, गहराई तथा वास्तविकता प्राप्त हुई है।

4. मसीह की देह के कारण दुःखभोग

परमेश्वर आपकी सुरक्षा के लिए समस्याओं का प्रयोग करते हैं। समस्याऐं छिपी हुई आशिष बन सकती हैं यदि वह आप को और किसी भयंकर बात के द्वारा नुकसान होने से बचाती है। पिछले वर्ष मेरे एक मित्र को उसके बौस ने नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि उसने उससे कुछ बेईमानी करने को कहा था। अब उसकी बेरोज़गारी एक समस्या थी – परन्तु वह दोषी करार दिए जाने और जेल भेजे जाने से बच गया क्योंकि एक वर्ष के पश्चात उसके प्रबन्धकों के कार्यो का पता चल गया। '' तुमने तो मेरे साथ बुराई करने की ठानी थी, परन्तु परमेश्वर ने उसी को भलाई के लिए ले लिया।'' उत्पत्ति 50:20 ।

★ कुलुस्सियों 1:24 ''अब मैं अपने दुखों में जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, आनन्द करता हूं और मसीह के क्लेशों की घटी को उसकी देह अर्थात कलीसिया के लिए अपने शरीर में पूर्ण करता हूं।''

जब हम सताव सहते हैं तो केवल हम ही नहीं यीशु भी दुख उठाता है।

★ प्रेरितो के काम 9:5 '' उसने पूछा, '' प्रभु, तू कौन है?'' तब उसने कहा, '' मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है।''

★ 1 कुरिन्थियो 4:7–12 "... ... हम चारों ओर से क्लेश सहते हैं, परन्तु मिटाए नहीं जाते ; निरुपाय तो हैं, परन्तु निराश नहीं होते ; सताए तो जाते हैं, परन्तु त्यागे नहीं जाते ; गिराए तो जाते हैं , परन्तु नष्ट नहीं होते। हम यीशु की मृत्यु को सदा अपनी देह में लिए फिरते हैं कि यीशु का जीवन हमारी देह में प्रकट हो। हम जो जी रहे हैं, सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथों सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरणशील शरीर में प्रकट हो। इस प्रकार मृत्यु तो हम में , पर जीवन तुम में कार्य करता है।"

★ हम यीशु के प्रेम और दुख के जीवित उदाहरण बन जाते हैं कि दूसरे देखें और सीखें।

★ 1 कुरिन्थियों 13:1–8 "प्रेम धैर्यवान है ... सब बातें सहता है ... सब बातों में धैर्य रखता है ... प्रेम कभी मिटता नहीं।"

5. कुछ बिमारी का दुःख परमेश्वर की महिमा के लिए है

★ यूहन्ना 11:4 "यह बिमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है।"

★ यूहन्ना 9:2–3 "रब्बी, किसने पाप किया, इस मनुष्य ने या इसके माता पिता ने, कि यह अंधा जन्मा?" यीशु ने उत्तर दिया, " न तो इस मनुष्य ने पाप किया, न ही इसके माता पिता ने, पर यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य उसमें प्रकट हों।"

★ 2 कुरिन्थियों 12:7–10 "प्रकाशनों की अधिकता के कारण मैं घमण्ड न करुं, इसलिए मेरी देह में एक कांटा चुभाया गया है, अर्थात शैतान का एक दूत, कि वह मुझे दुख दे घमण्ड करने से रोके रहे। ... ... इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, अपमानों दुखों, सतावों और कठनाइयों में प्रसन्न हूं, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं तभी सामर्थी होता हूं।"

6. कुछ दुखों का कारण परमेश्वर द्वारा अनुशासित करने का परिणाम है

परमेश्वर आपको सही करने के लिए समस्याओं का प्रयोग करता है। कुछ पाठ हम असफलताओं और पीड़ाओं के द्वारा सीखते है। हो सकता है जब आप छोटे बच्चे रहे हों, तब आपके माता पिता ने आपको गरम तवा छूने से मना किया हो। परन्तु आपने शायद यह पाठ जलने के बाद सीखा होगा। कई बार हमें किसी वस्तु का महत्व उसको खो देने के बाद पता चलता हैं, जैसे स्वास्थ्य, धन, सम्बन्ध आदि। "... यह मेरे लिए भला हुआ कि मैं तेरी विधियों को सीख सकूं।" भजन संहिता 119:71–72 ।।

★ इब्रानियों 12:5–11

★ 1 कुरिन्थियों 11:27–32 " इस लिए जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी और प्रभु के इस कटोरे में से पीता है, वह प्रभु की देह और लहू का दोषी ठहरेगा। अतः मनुष्य अपने आपको परखे ... क्योंकि जो खाता और पीता है, यदि उचित रीति से प्रभु की देह को पहचाने बिना खाता और पिता है तो अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए ही ऐसा करता है। इसी कारण तुम में से बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए हैं।"

★ यूहन्ना 15:1–5

हमें और फलदायक बनाने के लिए, परमेश्वर हमें छांटता है।

★ भजन संहिता 34:19 '' धर्मी पर बहुत – सी विपत्तियां आती तो है, परन्तु यहोवा उसको उन सब से छुड़ाता है।''

हमें इस सच्चाई को जानना चाहिए। परमेश्वर आपके जीवन में कार्यरत है – तब भी जब आप पहचान या समझ नहीं पाते। परन्तु यह तब ज़्यादा आसान और लाभदायक हो जाता है जब आप उसके साथ सहयोग करते हैं।

6. कठिन बाइबल प्रश्न

क. यदि आपको अपने विश्वास पर कुछ संदेह है तो क्या होगा ?

जबसे आप मसीही बने हैं, क्या आपको कभी कोई शंका या यीशु मसीह में आपके विश्वास के बारे में कोई सवाल रहा है?

क्या यीशु ने यह कहा, '' ओह! यह विश्वास नहीं कर रहा, मैं इसे बाहर निकाल दूंगा।'' नहीं !

यूहन्ना 6:37 ''ओह मैं '' ''मै कभी नहीं '' एक दोहरा नकारात्मक

क्या यदि मैं पाप करता हूं? ''मैं कभी भी नहीं करुंगा''

यीशु आपसे प्रेम करता है और आपके लिए उसका प्रेम इस बात पर आधारित नहीं है कि आप उससे कितना अधिक प्रेम करते हैं।

- ★ 1 यूहन्ना 4:8 ... परमेश्वर प्रेम है।
- ★ 1 कुरिन्थियों 13:7–8 ''प्रेम ... सब बातें सहता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों पर आशा रखता है, सब बातों में धैर्य रखता है। प्रेम कभी मिटता नहीं।''
- ★ 2 तीमुथियुस 2:13 '' यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता।''

आपके लिए परमेश्वर का प्रेम, आपकी प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं करता। उसने आपको चुना है, यह निर्णय लिया कि आपसे प्रेम करे, तथा वह हमेशा विश्वासयोग्य बना रहेगा।

परमेश्वर ने हमसे प्रेम करना चुना। रोमियों 5:8

रोमियों 8:29–39 परमेश्वर हमारे पक्ष में है! तुम्हारे विरुद्ध कौन आरोप लगा सकता है?

कौन तुम्हे दोषी ठहरा सकता है?

केवल एक जो आपको दोषी ठहरा सकता था आपके लिए मर गया।

और क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है, और हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते कि वह किसी तरह अपने निर्णय को बदल सके। इसलिए,'' यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता ह ै , क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता।''

उसने वायदा किया !

तीतुस 1:1–2 इब्रानियों 6:17–18 गिनती 23:19 रोमियों 11:29

'' यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता।'' 2 तीमुथियुस 2:13

ख. ''अन्त तक धीरज रखना '' : इसका क्या अर्थ है ?

मत्ती 10:22 ''मेरे नाम के कारण सब तुम से घृणा करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज रखेगा उसी का उद्धार होगा।''

पद 23 : अन्त के समय के बारे में बताता है।

तुलना करें : मत्ती 24:3–14 पद 13 वही वक्तव्य
पद 15, 21, 29 भारी क्लेश का समय।

यह हमारे डराने के लिए नहीं, परन्तु प्रोत्साहन के लिए है।

2 तीमुथियुस 2:11–12 यदि सहें ... राज्य करेंगे
रोमियों 8:18, 38

शिष्य हो जाने से आप परमेश्वर की सन्तान नहीं बन जाते :
मत्ती 13:20–21 2 तीमुथियुस 3:7 यूहन्ना 6:66

क्या है? विश्वास जो चलता रहता है ! इब्रानियों 10:39 ; 12:2–3 1 कुरिन्थियों 2:4–6

ग. मसीह का इनकार करना क्या है ?

मत्ती 10:32–33 ''पर जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे अस्वीकार करेगा, मैं भी उसे अपने पिता के सम्मुख, जो स्वर्ग में है, अस्वीकार करुंगा।''

2 तीमुथियुस 2:12–13 ''यदि हम धीरज से सहें तो उसके साथ राज्य भी करेंगे। यदि हम उसका इनकार करें तो वह भी हमारा इनकार करेगा। यदि हम विश्वासघाती हों, फिर भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता।''

प्रेरित पतरस ने क्या किया? पतरस ने मसीह का तीन बार इनकार किया !

मत्ती 26:33–35, 75 '' ...तू तीन बार मेरा इनकार करेगा।

क्या यीशु पतरस का इनकार कर सकता था? नहीं मरकुस 16:7 ; यूहन्ना 21:15–17

पतरस को उसके नाम से पुकारा :
यशायाह 43:1 ; 45:4 यूहन्ना 10:3 ; 2 तीमुथियुस 2:19 प्रकाशितवाक्य 3:5

हमारा निष्कर्ष केवल यह हो सकता है – विश्वास में यदा – कदा असफलताओं के कारण प्रभु हमारा इनकार नहीं कर देता।

परमेश्वर से उत्पन्न उस विश्वास में हो सकता है कि आप कभी कभी असफल हों, परन्तु अन्त का परिणाम यह है कि यह लगातार विश्वास करता रहता है और कभी भी अविश्वास के अन्तिम बिन्दु पर नहीं आता।

यह विश्वास करना स्थायी तौर से कभी भी बन्द नहीं करता।

उदाहरण : इब्राहीम : उत्पत्ति 15:2–4 ; 16:1–2 ; 20:1–2
मूसा : निर्गमन 4:14 ; गिनती 20:8–12

वह विश्वास जो परमेश्वर से उत्पन्न नहीं होता, कभी विश्वास करना आरम्भ नहीं करता।
उदाहरण : 2 पतरस 2:1 ; यहूदा 4 ; प्रभु हृदय देखता है।

1 यूहन्ना 2:19 (मत्ती 10:33 के समान है) :
''वे निकले तो हम में से, परन्तु वास्तव में हम में से नहीं थे ; क्योंकि यदि वे हम में से होते तो हमारे साथ रहते ; परन्तु वे निकल इसलिए गए कि यह प्रकट हो जाए कि वे सब हम में से नहीं हैं।''

इब्रानियों 10:39
'' हम उन में से नहीं जो नाश होने के लिए पीछे हटते हैं, पर उनमें से हैं, जो प्राणों की रक्षा के लिए विश्वास रखते हैं।''

घ. क्या मनुष्य सत्य जान कर भी अविश्वासी बना रह सकते हैं ?

2 पतरस 2:19–22

उदाहरण :
एक ''मिली – जुली भीड़ ''(निर्गमन 12:38) इस्राएल के साथ मिस्र से बाहर निकल आई। उन्होंने परमेश्वर की प्रजा के प्राप्त सारी आशिषों का लाभ उठाया। उन्होंने स्वर्ग से आया मन्ना खाया और चट्टान से निकला पानी पीया। वे इस्राएल की सन्तानों के साथ अलग किए गए, ''शुद्ध'' किए गए थे। परन्तु वे परमेश्वर के लोग नहीं थे। 1 कुरिन्थियों 10:1–5

यह आज भी सच है

वे परमेश्वर के लोगों के साथ पवित्र किए गए थे परन्तु परमेश्वर में विश्वास के द्वारा धर्मी नहीं ठहराए गए थे।

उदाहरण : 1 कुरिन्थियों 7:13–14
'' ... क्योंकि अविश्वासी पति अपनी पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है, और अविश्वासिनी पत्नी अपने विश्वासी पति के कारण पवित्र ठहरती है।''

हम उन लोगों की बात कर रहे हैं जो इस संसार के दूषित वातावरण से बच निकल आएं हैं, उसी प्रकार जैसे मिली – जुली भीड़ मिस्र के दूषित वातावरण से बच निकल आए थे। पवित्रीकरण (अलग किए) परन्तु धर्मी नहीं ठहराए गए। वे सच्चे विश्वासी नहीं है। उनका विश्वास सच्चा नहीं है।

यहूदा 1:5
अब मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूं, यद्यपि तुम इन बातों को पहिले ही से जानते हो, कि प्रभु ने मिस्र से एक कुल को बचाने के पश्चात उनको जिन्होंने विश्वास नहीं किया किस प्रकार नाश कर दिया।

मत्ती 13:24–30
जंगली बीज कभी गेहूं नहीं बन सकते और गेंहूं कभी जंगली बीज नहीं बन सकते।

उदाहरण : 2 पतरस 2:22
उन के लिए वह कहावत सही है : '' कुत्ता उल्टी कर के चाटता है,'' तथा '' नहलाया गया सूअर, वापस कीचड़ में जाकर लोटता है।''

तुलना करें :

- ★ मत्ती 12:43–45 अशुद्ध पदार्थ कुत्ते से बाहर निकला।
- ★ प्रेरितों के काम 16:16–22 एक दासी जिसमें भविष्य बताने वाली आत्मा थी, निकाली गई परन्तु विश्वास का कोई संकेत नहीं।
- ★ लूका 8:38–39 दुष्टात्मा ग्रस्त, विश्वासी बन गया
- ★ यूहन्ना 6:53, 60,66,26
  क्यों ? 1 यूहन्ना 2:19
- ★ नहाया हुआ सुअर। हेरोदेस : मरकुस 6:19–20,26
  फरीसी : मत्ती 23:25

मत्ती 1:21 : ''वह पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।''

यूहन्ना 6:44–45 रोमियों 9:14–16
यूहन्ना 8:44 इफिसियों 1:4
यूहन्ना 15:16, 19 2 थिस्सलुनिकियों 2:13
प्रेरितों के काम 13:48

मत्ती 6:9 यीशु ने हमें प्रार्थना करने को कहा : '' हे हमारे पिता ''

लूत का उदाहरण

उत्पत्ति 13 :1–12 झगड़ा
उत्पत्ति 13 :12 ; 14:12 लूत का नीचे की ओर जाना
उत्पत्ति 18 : 17–33 सदोम का नाश और इब्राहीम की मध्यस्थता
उत्पत्ति 19 : 16 लूत जाने का इच्छुक नहीं
उत्पत्ति 19:22, 30–38 कौटुम्बिक व्यभिचार का परिणाम अम्मोन ओर मोआब में।

क्या लूत धर्मी था ??? 2 पतरस 2:4–9 क्यों ?

रोमियों 4:3–6 ; 9:16 विश्वास द्वारा धार्मिकता

दाऊद और योनातान 1 शमूएल 20:8–17
योनातान का पुत्र : मपीबोशेत 2 शमूएल 9:1–13

परमेश्वर पापियों से प्रेम करता है लूका 5:30–32

दस कुंवारियों का दृष्टान्त मत्ती 25:1–13

1. '' तब स्वर्ग के राज्य की तुलना उन दस कुंवरियों से की जाएगी जो अपने दीपक लेकर दूल्हे से मिलने को निकलीं।''

भजन संहिता 119:105 ''तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला हैं।''

2. ''उनमें से पांच मूर्ख और पांच बुद्धिमान थी।''

मत्ती 23:17 '' हे मूर्खों और अन्धों, क्या महत्वपूर्ण है, सोना या वह जो सोने को पवित्र करता है?''
शास्त्रियों और फरीसियों के लिए बोला गया।

मत्ती 23:34 ''इसलिए देखो, मैं तुम्हारे लिए नबियों और ज्ञानियों और शास्त्रियों को भेज रहा हूं। तुम उनमें से कुछ की हत्या करोगे ओर कुछ को क्रूस पर चढ़ाओगे, फिर कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मरोगे और नगर नगर सताते फिरोगे।''

बुद्धिमान सच्चे विश्वासी होते हैं।

3. ''मूर्खों ने जब दीपक लिए तो उन्होंने अपने साथ तेल नहीं लिया।''

उनके पास वचन था परन्तु उन ''में'' परमेश्वर का आत्मा नहीं था।

शास्त्रियों और फरीसियों के पास परमेश्वर का वचन था परन्तु वे प्रभु में विश्वास नहीं करते थे, इस कारण उनके पास पवित्र आत्मा – तेल नहीं था।

4. ''परन्तु बुद्धिमानों ने अपने दीपकों के साथ कुप्पियों में तेल भी लिया।''

उनके पास वचन और आत्मा थी। सच्चे विश्वासी।

5. ''जब दूल्हे के आने में देर हो रही थी तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गई।''
6. आधी रात को पुकार मची : '' देखो, दूल्हा आ रहा है! उस से भेंट करने चलो!''
7. '' तब वे सब कुंवारी उठ बैठीं और अपना अपना दीपक ठीक करने लगीं।''
8. मूर्खों ने बुद्धिमानों से कहा, ''हमें भी अपने तेल में से कुछ दे दो, क्योंकि हमारे दीपक बुझने पर हैं।''
9. परन्तु बुद्धिमानों ने उत्तर दिया, '' नहीं, यह हमारे लिए और दूसरों के लिए पूरा न होगा। अच्छा है कि तुम दुकानदारों के पास जा कर अपने लिए मोल लो।''

आपका विश्वास केवल आपके लिए है और किसी दूसरे व्यक्ति को अपने साथ नहीं ले सकते।

10. ''जब वे मोल लेने को चली गईं तो दुल्हा आ गया, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह भोज में अन्दर चली गईं। तब द्वार बन्द कर दिया गया।
11. बाद में वे दूसरी कुंवारियां भी आ कर कहने लगीं, ''स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे!
12. परन्तु उसने उत्तर दिया, ''मैं तुमसे सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।''

2 कुरिन्थियों 6:2 ''क्योंकि वह कहता है, ''ग्रहण किए जाने के समय मैंने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैंने तेरी सहायता की।'' देखो, अभी ग्रहण किए जाने का समय है। देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।''

उद्धार का दिन आज है, उस दिन नहीं ! उसके आने के दिन नहीं।

13. इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न तो उस दिन को जानते हो और न ही उस घड़ी को।

ङ समझना : इब्रानियों 6:6

1. सन्दर्भ : इब्रानियों 5:12–14

(पद 12) ''तुम्हें अब तक तो शिक्षक हो जाना चाहिए था, फिर भी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें फिर से परमेश्वर के वचन की प्रारम्भिक शिक्षा दे। तुम्हें तो ठोस भोजन की नहीं पर दूध की आवश्यकता है।''

★ ''दूध'' शिशुओं के लिए होता है कि वे बढ़ें।

(पद13) '' प्रत्येक जो दूध ही पीता है, वह धार्मिकता के वचन का अभ्यस्त नहीं, क्योंकि वह बालक है।''

★ तुलना करें गलातियों 4:1–2
★ वह ''कानूनी अवस्था'' के बारे में बात कर रहा है।
★ इस्राएल की सन्तान, पुत्र की कानूनी अवस्था में चालीस साल देर से पहुंची।

(पद 14) ''परन्तु ठोस भोजन तो बड़ों के लिए है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियां अभ्यास के कारण भले – बुरे की पहिचान करने में निपुण हो गई हैं।''

★ ''बड़े '' पुत्र होना बताता है और न कि बालक।

2. इब्रानियों 6:1 ''इसलिए हम मसीह के विषय में प्रारम्भिक शिक्षा को छोड़ कर सिद्धता की ओर बढ़ते जाएं और मरे हुए कार्यों से मन फिराने, परमेश्वर पर विश्वास करने, ''

★ ''बढ़ना '' स्वर्ग जाने का सवाल नहीं, परन्तु विकसित होना है! मरे हुए कार्य। विधिवादी।

3. इब्रानियों 6:3 ''यदि परमेस्वर चाहे तो हम ऐसा ही करेंगे।''

★ ''...यदि परमेस्वर चाहे तो...''

4. इब्रानियों 6:4 ''क्योंकि जो लोग एक बार ज्योति पा चुके हैं और स्वर्गिक वरदान का स्वाद चख चुके हैं तथा पवित्र आत्मा के भागी बनाए गए हैं,''

★ ''एक बार ज्योति पा चुके हैं '' परमेस्वर के वचन के द्वारा।
इफिसियों 1:18 ; इब्रानियों 10:32

★ ''स्वर्गिक वरदान का स्वाद चख चुके हैं '' मन्ना ; निर्गमन 16

★ ''पवित्र आत्मा के भागी बनाए गए हैं '' उसकी उपस्थिति। ''दिन में बादल, रात में अग्नि।''

5. इब्रानियों 6:5 ''और परमेश्वर के उत्तम वचन का तथा आने वाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं।''

★ ''परमेश्वर के उत्तम वचन का स्वाद'' अपने लहू से छुड़ाए लोगों को जंगल में खिलाया तथा चट्टान से पानी पिलाया।

★ ''आने वाले युग की सामर्थ'' निर्गमन 14:13 ''खड़े खड़े यहोवा के उद्धार को देखो''

6. इब्रानियों 6:6 ''यदि वे भटक जाएं तो उन्हें मन – परिवर्त्तन के लिए फिर से नया बनाना असम्भव है, क्योंकि वे अपने लिए परमेश्वर के पुत्र को पुनः क्रूस पर चढ़ाते हैं और खुलेआम उसका अपमान करते हैं।''

★ ''मन – परिवर्त्तन के लिए उन्हें फिर से नया बनाना असम्भव है''

सिद्धता नहीं ! उद्धार नहीं ! परन्तु मन परिवर्त्तन के लिए

गिनती 13:23,27 जासूस देश में भेजे गए। उसकी उत्तमता को चखा।
परन्तु बलवान ! 13:31 ; 14:11 ; 31–34 , 40–45

★ परमेश्वर ने उन्हें पश्चाताप करने नहीं दिया।

★ देश में जा नहीं सकते। वापस मिस्र नहीं जा सकते।
वे परमेश्वर के थे।

7. इब्रानियों 6:6 ''वे अपने लिए परमेश्वर के पुत्र को पुनः क्रूस पर चढ़ाते हैं और खुलेआम उसका अपमान करते हैं।''

★ मूसा का उदाहरण :

निर्गमन 17:3 पानी के लिए प्यासा 17:6 मूसा चट्टान पर मारता है
(1 कुरिन्थियों 10:4 ; इब्रानियों 9:28)

''पानी निकल आया'' पवित्र आत्मा यूहन्ना 4:14
''और परमेश्वर के उत्तम वचन का तथा आने वाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं।''

दो वर्ष के पश्चात : जासूस देश में जाते हैं। अविश्वास और अवज्ञा।
गिनती 20:2–13

★ पद 9 मूसा की लाठी नहीं, परन्तु हारुन की लाठी (गिनती 17:10)
एक याजकीय लाठी, मध्यस्थता। न्याय की लाठी नहीं।

★ पद 8 ''चट्टान से बात कर'' (शब्द का अर्थ – ऊंचा स्थान)

★ पद 11 ''चट्टान पर लाठी से दो बार मारा'' मूसा ने आज्ञोल्लंघन किया और एक तरह से ''परमेश्वर के पुत्र को पुनः क्रूस पर चढ़ाया।''

★ पद 12 आज्ञोल्लंघन का परिणाम। गिनती 27:12–14

★ व्यवस्थाविवरण 34:1–7 मूसा ने पश्चाताप किया – परमेश्वर ने उसे ग्रहण नहीं किया।

★ क्या मूसा स्वर्ग गया ? हां ! इब्रानियों 3:5 लूका 9:28–31

8. इब्रानियों 6 का स्वर्ग या नरक जाने से कुछ लेना देना नहीं है, परन्तु विश्वासी का अपने बालकपन को छोड़कर पुत्रत्व में प्रवेश करना या आज्ञाकारी होना = परमेश्वर का राज्य। भजन संहिता 106:32–33

9. इब्रानियों 6:7–8 '' जो भूमि बार बार होने वाली वर्षा के पानी को पीती और जोतने – बोने वालों के लिए लाभदायक साग पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशिष पाती है। (पद 8) परन्तु यदि वह कांटे और ऊंटकाटारे ऊपजाए तो वह निकम्मी और शापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना है।

1 कुरिन्थियों 3:9 ''हम परमेश्वर के खेत हैं।''
मत्ती 13:37 '' जो अच्छा बीज बोता है वह मनुष्य का पुत्र है।''

★ भूमि = विश्वासी ; बीज = परमेश्वर का वचन ; वर्षा = पवित्र आत्मा का पानी
योएल 2:23 याकूब 5:7

★ पद 8 ''निकम्मा'' ''त्यागा'' यूनानी – अस्वीकृत
1 कुरिन्थियों 9:27 में वही शब्द

छोड़ा हुआ नहीं परन्तु अब किसी काम की नहीं।
2 तीमुथियुस 2:21 गलातियों 5:7

★ ''कांटे और ऊंटकाटारे'' – देह की बेकार और हानिकारक उपज।

★ ''शापित होने पर है''
1 पतरस 4:17–18 ... धर्मी के लिए कठिनाई

★ '' उसका अन्त जलाया जाना है।'' – भूमि, वर्षा, कांटे ,ऊंटकाटार, सभी रुपक।

तुलना करें : 1 कुरिन्थियों 3:11–15 ''परन्तु वह स्वयं बच जाएगा, फिर भी मानों आग से जलते जलते।''

भूमि की हानि नहीं हुई परन्तु कूड़ा हट गया।

च. समझना : इब्रानियों 10:26

''यदि सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी हम जान बूझकर पाप करते रहें तो फिर पाप के लिए कोई बलिदान शेष नहीं रहा।''

सन्दर्भ : इब्रानियों 7:25–27 ; 9:12, 14, 26, 28 ; 10:10, 18, 26

वह कह रहा है : पाप के लिए और कोई उपाय नहीं है। यदि हम वापस किसी और बलिदान की तरफ जाएं – कुछ और उपाय – पाप के लिए और कोई उपाय नहीं है। यीशु मसीह ही एक मात्र है।

यह इब्रानियों 8–10 अध्याय का उपसंहार है।

तुलना करें 1 यूहन्ना 1:7 हम क्षमा प्राप्त कर चुके हैं। इफिसियों 4:32

उदाहरण : पौलुस

प्रेरितों के काम 23:1–5 : अपनी गलती का एहसास करते हुए, पौलुस ने अपराध–स्वीकार किया। 1 यूहन्ना 1:9

यही वो है जिसके विषय में इब्रानियों 10:26 में बताया गया है।

हम कभी भी किसी और बलिदान की ओर नहीं जाते।
यदि मैं यह करता हूं, तो यह जान बूझ कर पाप करना होगा।

उदाहरण : गलातियों 5:1–4 पौलुस उनको यह चेतावनी दे रहा है कि व्यवस्था में दुबारा न लौटें।

उदाहरण : मैं पाप करता हूं : अपने विवेक को शुद्ध करने के लिए मैं पांच लोगों को जा कर बताता हूं। मैं उपवास और प्रार्थना करता हूं। मैं एक दिन में दस अध्याय पढ़ लेता हूं। यह सब "मरे हुए कार्य "हैं।

केवल यीशु का लहू ही हमारे पापों को क्षमा और शुद्ध कर सकता है।

नतीजा यह निकलता है : केवल एक ही बलिदान परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है।

यदि मैं क्रस को छोड़ और किसी बलिदान की ओर शुद्ध होने के लिए मुड़ जाऊं – तो मैं परमेश्वर के अनुग्रह से अलग चला जाऊंगा।

मैं एक मात्र राह से अलग हो गया : "मसीह से अलग और अनुग्रह से वंचित" (गलातियों 5:4)

इब्रानियों 10:27–29 " परन्तु दण्ड की भयानक प्रतीक्षा और अग्नि – ज्वाला शेष है जो विरोधियों को भस्म कर देगी। जो कोई मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करता है, वह दो या तीन लोगों की गवाही पर बिना दया के मार डाला जाए। तो तुम्हीं सोचो कि वह व्यक्ति और भी कितने कठोर दण्ड भागी होगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पैंरों से रौंदा और वाचा के लहू को, जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया, अपवित्र समझा और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया है।"

जब आप यीशु मसीह और उसके उस एक बलिदान से जो एकमात्र क्षमा और शुद्ध करने वाला है, अलग हो जाते हो, तो आप धार्मिक गतिविधियों की ओर मुड़ कर और यीशु के द्वारा किये कार्यों के ऊपर चढ़ कर चले जाते हो।

इब्रानियों 10:30 क्योंकि हम जानते हैं जिसने कहा, " बदला लेना मेरा काम है, बदला मैं ही दूंगा।" और फिर यह, "प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।"

वह "अपने लोगों " के बारे में बात कर रहा है जिन्होंने उसमें तथा उसके छुटकारे के कार्य पर विश्वास किया, परन्तु उनकी चाल उसके द्वारा प्रतिदिन शुद्ध किए जाने के लिएबनाए गए उपाय में नहीं है।

उदाहरण :

★ यूहन्ना 13:8 "यदि मैं तुझे न धोऊं तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।"

क्या यीशु का यह अभिप्राय है कि वह नरक में जा रहा है? नहीं ! उसने विश्वास किया।

उसका कहने का यह अभिप्राय है : कोई सहभगिता नहीं, कोई संगति नहीं।(युनानी शब्द : ''मेरोस'' अर्थ ''बांटना या भाग'')। वह अपनी पूरी आशिष का भाग खो देगा।

पद 9 : '' केवल पैर ही नहीं '' ''जिसने स्नान कर लिया...'' अभिप्राय यह है कि वह पहले से धर्मी है। उसके पैरों के समान, उसके दैनिक चाल को शुद्ध होने की आवश्यकता है। प्रतिदिन अपने पापों को मानने , शुद्ध करने के विषय में बताता है।

इब्रानियों 10:14 उसने तुम्हें सदा के लिए सिद्ध कर दिया है।

★ पढ़ें : इब्रानियों 10:26–29 फिर पढ़ें : यहेजकेल 44:10–16
वे निकट नहीं आ सकते थे –सेवक के समान सेवा की।
इब्रानियों 12:6 जिससे प्रभु प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है।

वह अनुशासन के विषय में बता रहा है, ताड़ना जो प्रभु अपने लोगों को देता है यदि वे किसी और की तरफ शुद्ध होने के लिए जाएं। पापों के लिए और कोई बलिदान नहीं है।

★ यहोशु 7:10–13 यरीहो पर विजय के बाद, इस्राएल ऐ में पराजित हुआ। यह सब एक व्यक्ति के पाप के कारण। फिर भी वे उसके लोग थे।

1 कुरिन्थियों 12:26 हम एक देह हैं / सब सहते हैं / इस कारण यदि एक अंग नरक में जाता है तो सब को जाना होगा।

इफिसियों 4:25 हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। वह देह के केवल एक अंग को स्वर्ग ले कर नहीं जाएगा। परन्तु बिना कलंक या झुर्री की दुल्हिन । इफिसियों 5:27

यहोशु 7:25–26 क्या आकान स्वर्ग गया? हां ! परमेश्वर को उसकी कोई परवाह नहीं होती यदि वह उसका पुत्र नहीं होता।

उदाहरण के लिए : मत्ती 13:28–29 ''जंगली घास को बढ़ने दो।''

परमेश्वर को उससे कोई परवाह नहीं जो उसका नहीं, परन्तु वह अपनों को अनुशासित करता है।

★ प्रेरितों के काम 5:1–11 ''ऐसा पाप जिसका परिणाम मृत्यु नहीं '' 1 युहन्ना 5:16
जब कोई विश्वासी प्रभु के काम के बीच में आ जाता है और प्रभु के नाम पर तथा कलिसिया को कलंकित करता है, प्रभु उसको घर बुला सकता है। हनन्याह और सफीरा विश्वास के द्वारा धर्मी थे। ईमानदारी के कार्य के द्वारा नहीं।

★ 1 कुरिन्थियों 5:1–7

इब्रानियों 10:35–37 ''इसलिए अपना भरोसा न छोड़ो, ज्सिका महान प्रतिफल है। क्योंकि तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है कि तुम परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करके जिस बात की प्रतिज्ञा की गई थी उसे प्राप्त कर सको। क्योंकि अब थोड़ी ही देर में आने वाला आएगा और विलम्ब नहीं करेगा।''

विषय है : प्रतिफल न खोना। यहेजकेल 44 के समान।

यही कारण है कि हमें ''भस्म कर देने वाली'' अग्नि से होकर जाना है। पद 27
1 कुरिन्थियों 3:13 2 कुरिन्थियों 5:10

इब्रानियों की पत्री इस्राएल के लोगों को लिखी गई , जिनके बाप – दादा मिस्र से बाहर निकले, जंगल की यात्रा से, परन्तु उन्हें ''प्रतिज्ञा किए हुए देश'' में प्रवेश करने से वंचित होना पड़ा। वे जंगलों में हारुन, मरियम, मसा के साथ मर गए।
गिनती 20:1 ; 33:39 ; व्यवस्थाविवरण 34:1–5

क्या वे स्वर्ग गए? अनन्त जीवन पाए ? हां ! उन्हें मिला।
इसी प्रकार उन्हें जो : 1 कुरिन्थियों 10:8–10 जिन्हे परमेश्वर की ताड़ना मिली। 1 कुरिन्थियों 3:17

इब्रानियों 10:38 ''मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, परन्तु यदि वह पीछे हटे तो मेरे मन को प्रसन्नता नहीं होगी।''

इस्राएल की सन्तानों को क्या हुआ जब उन्हें ने देश में जाने से वंचित होना पड़ा। विनाश !

इब्रानियों 10:39 '' हम उनमें से नहीं जो नाश होने के लिए पीछे हटते हैं, पर उनमें से हैं, जो प्राणों की रक्षा के लिए विश्वास रखते हैं।''

संसार के साथ चलना छोड़ दो। वह स्वर्ग जाने की बात नहीं कर रहा परन्तु परमेश्वर के छुटकारे और उद्धार में चलना।

वह विश्वासियों से बात कर रहा है जो सिद्ध किए गए परन्तु उनके ''मनों को नया बनाने'' की आवश्यकता है, परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानते हुए ''बचाया गया प्राण।''

धर्मी ठहराए जाने और बचाए जाने में अन्तर है।

''एक बार बचे सदा बचे '' आवश्यक नहीं सत्य हो।
'' एक बार धर्मी ठहराए गए, सदा के लिए धर्मी '' सत्य है।

रोमियों 3:21 – 4:8 ; 5:1, 9–10 ; 6:1 तथा ; 10:9–13 ; लूका 6:46

पवित्र शास्त्र के यह सारे भाग ज़िक्र कर रहे हैं उन धर्मी लोगों का जो प्रभु के छुटकारे (उद्धार)का अनुभव नहीं कर रहे हैं।

उदाहरण :
इस्राएल देश में (परमेश्वर के राज्य का चित्रण) :
धर्मी ठहराए तथा बचाए गए।

बाद में पाप के कारण – वे बेबीलोन भेजे गए।
वे फिर भी उसके – धर्मी ठहराए थे। परन्तु वे बचाए गए नहीं थे।

ऐसे बहुत से धर्मी ठहराए गए लोग हैं जो बचाए नहीं गए । यह है – पाप पर दैनिक विजय में चलना, जहां शैतान उन्हें छू नहीं सकता।

इब्रानियों 9:12 '' और बकरों तथा बछड़ो के लहू द्वारा नहीं, वरन् स्वयं अपने लहू द्वारा सदा के लिए एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश कर के अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।''

छ. समझना : जीवन की पुस्तक में लिखे गए नाम

प्रकाशितवाक्य 3:4–5 : '' पर सरदीस में तेरे पास कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए हैं। वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ चलेंगे – फिरेंगे , क्योंकि वे इस योग्य हैं। वह जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा। मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से न मिटाऊंगा, वरन् अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के समक्ष उसका नाम मान लूंगा।''

1 यूहन्ना 5:4–5 : '' क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है ; और वह विजय जिसने संसार पर जय प्राप्त की यह है – हमारा विश्वास। और वह कौन है जो संसार पर विजयी होता है? सिवाय उसके जो यह विश्वास करता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है।

लूका 10:20 '' फिर भी इस बात पर आनन्दित मत होओ कि आत्माएं तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस बात में आनन्दित होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।''

इब्रानियों 12:23 ''महासभा अर्थात उन पहलौठों की कलीसिया के समीप जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं।''

यीशु ने कहा, ''मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से न मिटाऊंगा।''

प्रकाशितवाक्य 13:8 ''पृथ्वी के सब निवासी उसकी पूजा करेंगे, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति जिसका नाम उस मेमने के जीवन की पुस्तक में जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात किया गया है नहीं लिखा गया है।'' (IBP)

प्रकाशितवाक्य 13:8 ''पृथ्वी के सब रहने वाले जिनके नाम उस मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात किया हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।'' (BSI OV)

प्रकाशितवाक्य 17:8 ''जिस पशु को तू ने देखा, वह था तो, परन्तु अब नहीं है। वह अथाह कुण्ड से अपने विनाश के लिए निकलने वाला है। पर पृथ्वी के निवासी जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए, उस पशु को जो था पर अब नहीं है पर आने वाला है, देख कर अचम्भा करेंगे।''

प्रकाशितवाक्य 20:12 ''तब मैंने छोटे बड़े सब मृतकों को सिंहासन के समक्ष खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खुल गई, तथा एक और पुस्तक खोली गई जो जीवन की पुस्तक है, और उन पुस्तकों में लिखी हुई बातों के आधार पर सब मृतकों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया गया।''

प्रकाशितवाक्य 20:15 ''जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में फेंक दिया गया।''

प्रकाशितवाक्य 21:27 ''परन्तु कोई भी अपवित्र वस्तु या घृणित कार्य अथवा झूठ पर आचरण करने वाला, उसमें प्रवेश न करेगा, परन्तु केवल वे जिनके नाम मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।''

यीशु ने आपको चुना और आपके नाम जीवन की पुस्तक में लिख दिया। वह अपना मन नहीं बदलेगा। वह

इफिसियों 1:4 ''उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पूर्व मसीह में चुन लिया कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।''

कुछ लोग निर्गमन 32 का सहारा ले सकते हैं।
इस्राएल की सन्तानों ने सोने का बछड़ा बनाया। मूर्तिपूजा । पहली और दूसरी आज्ञा तोड़ी।

निर्गमन 32:31–35 ''तब मूसा ने यहोवा के पास लौट कर कहा, ''हाय, इन लोगों ने बड़ा पाप किया है, अर्थात इन लोगों ने अपने लिए सोने का देवता बनाया है। पर अब तू इन के पाप क्षमा कर, यदि नहीं तो अपनी पुस्तक से जिसे तूने लिखा है मेरा नाम मिटा दे।'' तब यहोवा ने मूसा से कहा, '' जिस किसी ने मेरे विरुद्ध पाप किया है, मैं उसी का नाम अपनी पुस्तक में से मिटा दूंगा। परन्तु तू अब जा और अपने लोगों की अगुवाई कर और उन्हे उस स्थान पर ले जा जिसके विषय मैंने तुझे बताया है, देख, मेरा दूत तेरे आगे आगे जाएगा। तौभी जिस दिन मैं दण्ड दूंगा उस दिन उन्हें इस पाप का भी दण्ड दूंगा।'' तब यहोवा ने हारुन के द्वारा बनाए गए बछड़े के कारण उन पर मरी भेजी।

उनके नाम जीवन की पुस्तक से मिटाया नहीं गया, परन्तु उनको दण्डित किया गया। उसने उनकी अगुवाई करना जारी रखा। अतः वह कौन सा पाप था जिसके विषय में उसने कहा, ''जिस किसी ने मेरे विरुद्ध पाप किया है, मैं उसी का नाम अपनी पुस्तक में से मिटा दूंगा।''

भजन संहिता 69:28 ''उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काट दिया जाए और धर्मियों के साथ लिखा न जाए।''

वह किसके विषय में कह रहा है? इसका संदर्भ क्या है?

भजन संहिता 69:21–22 '' उन्होंने खाने के लिए मुझे इन्द्रायन दिया, और मेरी प्यास बुझाने के लिए मुझे सिरका पिलाया। उनका भोजन उनके लिए फन्दा, और उनका सुख एक जाल बन जाए।''

वह स्पष्टतः क्रूस के विषय में कह रहा है। जो उनकी भलाई के लिए होना था वही एक जाल, एक फन्दा बन गया। अविश्वास का पाप वह पाप है जो मिटा देता है।

वही क्रूस जो विश्वास करने वाले पापी को बचाता है, अविश्वास करने वाले पापी को दोषी ठहरा देता है।

कोई भी नरक इसलिए नहीं जाता क्योंकि वह पापी है। वे इसलिए जाते हैं क्योंकि उन्होंने ''परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया है।'' (यूहन्ना 3:18)

'' उनका भोजन उनके लिए फन्दा '' बन गया। (भजन संहिता 69:22)
उन्होंने ''सहभागिता की भोज'' से खाना नहीं चुना।

भजन संहिता 69:23 ''उनकी आंखे धुंधली हो जाएं कि वे देख न सकें, और उनकी कमर निरन्तर कांपती रहें।''

आज के दिन तक इस्राएल अन्धा है तथा वे भय में रहते हैं।

व्यवस्थाविवरण 28:37 ''जिन सब जातियों के मध्य यहोवा तुझे खदेड़ेगा उनमें तू एक भयानक विनाश, कहावत तथा निन्दा का पात्र बनेगा।''

भजन संहिता 69:24 ''अपना रोष उन पर भड़का, और तेरे कोप की ज्वाला उन्हें निगल जाए।''

भजन संहिता 69:25 ''उनकी छावनी उजड़ जाए, उनके डेरों में कोई न बसे।''

उसने उनके शहर को , उनके मन्दिर को 70 ई▪ में नष्ट कर दिया तथा परमेश्वर का दण्ड उनके पीछे रहा। जब तक :

रोमियों 11:25 '' कि इस्राएल का एक भाग तब तक कठोर बना रहेगा, जब तक ग़ैरयहूदियों की संख्या पूर्ण न हो जाए।''

1967 में इस्राएल वापस अपनी भूमि पर लौटा। क्या ''ग़ैरयहूदियों की संख्या पूर्ण '' हो गई या उसके निकट है?

भजन संहिता 69:26 ''क्योंकि जिसको तू ने स्वयं मारा वे उसी को सताते हैं, और जिनको तू ने घायल किया वे उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं।''

प्रेरितों के काम 2:23 ''इसी मनुष्य को, जो परमेश्वर के पूर्व–निश्चित योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया था, तुमने विधर्मियों के हाथों क्रूस पर कीलों से ठुकवा कर मार डाला।''

भजन संहिता 69:27–28 ''तू उनके अधर्म पर अधर्म बढ़ा, और वे तेरी धार्मिकता में प्रवेश न करने पाएं। उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काट डाला जाए और धर्मियों के साथ लिखा न जाए।''

रोमियों 11:5–12

ज. पुराने नियम की व्यवस्था तथा नए नियम विश्वासी।

दस आज्ञाएं या ''व्यवस्था '', निर्गमन 20 अध्याय में दर्ज है।
जब हम पहले और दूसरे पद का पढ़ते हैं तो देखते हैं कि यह हमें नहीं परन्तु उन लोगों को सम्भोधित है जो मिस्र से निकाले गए थे।

पुराने नियम की प्रत्येक आज्ञा जिन्हें मसीहीयों को मानना है, नए नियम में दोहराई गई है तथा यह अकसर पहले से ज़्यादा सख्त है।

उदाहरण के लिए, जैसे :

कोई दूसरा ईश्वर नहीं।	1 कुरिन्थियों 8:4 1 तीमुथियुस 2:5
कोई प्रतिमा नहीं (उपासना की सहायता के रुप में)	प्रेरितों के काम 15:20 1 कुरिन्थियों 10:7
शपथ न खाना	याकूब 5:12

सब्त : मसीहीयों को यहूदी सब्त रखने की कोई आज्ञा नहीं दी गई, जो 7 वें दिन, शनिवार को रखा जाता है। दस आज्ञाओं में से यही वह एक आज्ञा है जो नए नियम के विश्वासीयों के लिए दोहराई नहीं गई।

माता पिता का आदर करना	इफिसियों 6:1
हत्या न करना	1 पतरस 4:15
व्यभिचार न करना	प्रेरितों के काम 15:20
चोरी न करना	इफिसियों 4:28

झूठ, झूठी साक्षी न देना	कुलुस्सियों 3:9
लालच न करना	इफिसियों 5:3

मसीही मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। मूसा की व्यवस्था विश्वासीयों के लिए प्रभु यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण हो जाती है।

- ★ गलातियों 2:16 ; 3:10–14 ; 5:4, 18
- ★ इफिसियों 2:13–16
- ★ कुलुस्सियों 2:13–16
- ★ रोमियों 10:4 ; 6:14 ; 7:6 ; 14:5–6
- ★ 2 कुरिन्थियों 3:7–11
- ★ प्रेरितों के काम 15:1–11 , 13–21

विश्वासीयों के लिए सब्त का वर्णन इब्रानियों 4 में किया गया है।

प्रतिदिन प्रभु की आराधना करनी चाहिए परन्तु मसीहीयों ने सप्ताह का पहला दिन अलग कर दिया क्योंकि :

1. यीशु मसीह सप्ताह के पहले दिन मृतकों में से जी उठे। यूहन्ना 20:1
2. यीशु पुनरुत्थान के बाद अपने शिष्यों से उपरी कक्ष मे दो बार अलग अलग सप्ताह के पहले दिन मिले। यूहन्ना 20:19, 26। लूका 24:13
3. पिन्तेकुस्त सप्ताह के पहले दिन आया। प्रेरितों के काम 2:1
4. प्रेरित प्रचार के लिए तथा प्रभु भोज लेने के लिए सप्ताह के पहले दिन मिले। प्रेरितों के काम 20:7
5. मसीहीयों को आज्ञा दी गई कि सप्ताह के पहले दिन अपने दान ले कर आएं। 1 कुरिन्थियों 16:2

हालांकि, परमेश्वर के लिए विश्राम दिन रखने का नियम बदला नहीं। यह हर किसी दिन के समान नहीं परन्तु इसे खास दिन होना था। यशायाह 58:13

मसीहीयों की इच्छा यह है कि प्रभु के दिन को खास दिन रखें, विश्राम का दिन तथा आराधना के लिए, न कि बाहर घूमने का, घर का या बाहर का काम करने का, खेल इत्यादि का, तथा विश्वासीयों का एकत्रित हो कर आराधना को नज़रअंदाज़ करने का।

पुराने नियम की आज्ञाओं का सार क्या है?

मत्ती 22:36–40
रोमियों 13:8–10

नए नियम की आज्ञाओं का सार क्या है?

1 यूहन्ना 3:23

हम कैसे परमेश्वर और मनुष्य से प्रेम करें ?

पवित्रता का जीवन	1 पतरस 1:14–16	1 थिस्सलुनीकियों 3:12–13
प्रार्थना	मत्ती 6 : 6, 9	इफिसियों 6:18

बाइबल अध्ययन	2 तीमुथियुस 2:15	2 तीमुथियुस 2:2
आराधना	इब्रानियों 13:15	इब्रानियों 10:25 ; मत्ती 5:16
दान देना	रोमियों 12:1–3	2 कुरिन्थियों 8:1–5 ; 1 कुरिन्थियों 16:1–2
गवाही देना	मत्ती 10:32 ; 28:19	याकूब 5:19–20

इन कार्यों को करने के द्वारा परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है। हम उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहते हैं।

यहूदियों ने यीशु से पूछा कि वे कैसे परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं। यूहन्ना 6:28–29

हम परमेश्वर को प्रसन्न या उसको अपने कार्यों द्वारा प्रसन्न नहीं कर सकते जब तक कि हम उस पर विश्वास न करें।
फिर हमारा पूरा जीवन उसके लिए जीना तथा उसकी आज्ञाओं को मान कर हम उसके प्रति अपने प्रेम और आभार को व्यक्त करते हैं। 1 यूहन्ना 2:3–6

आभार :
भाग लिए गए :
"Failed Yet Forgiven" Keith Lamb ; Lamb Publishing

जब कोई बिना सुसमाचार सुने मरता है तो क्या वह दोषी ठहरता है?

फ्रैंकलिन के नोट्स

एक प्रश्न पूछा गया : परमेश्वर हमारे उन पूर्वजों का, या नवजात शिशुओं का कैसे न्याय करेगा, जिन्हें न तो सुसमाचार सुनने का अवसर मिला और न ही उनके पास यीशु को ग्रहण करने का कोई मौका आया। क्या वे स्वर्ग जाएंगे?

यह बहुत कठिन प्रश्न है और इसका उत्तर भिन्न-भिन्न धर्म वैज्ञानिक मतों को रखने वाले लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से दिया है। मेरा उत्तर यह है।

I. परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति के पहले से ही अपने **परिवार को चुन रखा** था और उनके नाम उसने "जीवन की पुस्तक" में लिखे लिए थे।

इफिसियों 1:3-6 हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता परमेश्वर धन्य हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशिषों से आशीषित किया है। 4 उसने हमें **जगत की उत्पत्ति से पूर्व** मसीह में **चुन लिया** कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। 5 उसने हमें अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार पहिले से ही अपने लिए यीशु मसीह के द्वारा लेपालक पुत्र होने के लिए ठहराया

फिलिप्पियों 4:3 ... इन महिलाओं ने ... मेरे साथ और क्लेमेन्स तथा मेरे **अन्य सहकर्मियों** सहित **जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं,** सुसमाचार के लिए संघर्ष किया है।

लूका 10:20 फिर भी इस बात पर आनन्दित मत होओ कि आत्माएं तुम्हारें वश में हैं, परन्तु इस बात से **आनन्दित होओ** कि **तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं**।"

प्रकाशितवाक्य 3:5 वह जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा। मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से न मिटाऊंगा, वरन अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के समक्ष उसका नाम मान लूंगा।

★ इब्रानियों 9:12 अनन्त छुटकारा / 5:9 अनन्त उद्धार / 9:15 अनन्त मीरास

★ जब कोई परमेश्वर से उत्पन्न होता है तो विजय प्राप्त करता है (1 यूहन्ना 5:4) और उसका नाम कभी भी जीवन की पुस्तक से मिटाया नहीं जाएगा।

★ परमेश्वर से उत्पन्न γενναω (गे-ना-ओ) का अर्थ जन्म देना (मूल रुप से पिता से लेकिन माँ के माध्यम से); यह 'नए किए जाने' का रुपक है : (यूनानी – इब्रानी शब्दकोश) यही शब्द इन पदों में भी हैं : यूहन्ना 1:13, 3:3; 1 यूहन्ना 2:29; 5:1, 18 और यहाँ यह हमारे **पहले या प्राकृतिक जन्म** के बारे में जिक्र करता है।

★ वे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे होंगे, वे

- "उस पशु" की पूजा करेंगे। प्रकाशितवाक्य 13:8; 17:8
- उन्हें "आग की झील में फेंक" दिया जाएगा। प्रकाशितवाक्य 20:15
- एक नया यरुशलेम : परन्तु कोई भी ... उसमें प्रवेश न करेगा, परन्तु केवल वही जिनके नाम मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं। प्रकाशितवाक्य 21:27

II. अपने बच्चों को छुड़ाने और उनके पापों को क्षमा करने के लिए ... यीशु मसीह ने पापों के दंड के लिए पवित्र परमेश्वर की धर्मी मांगों को क्रुस पर बहाए अपने लहू के द्वारा पूरी तरह से संतुष्ट किया।

इब्रानियों 9:24-27 क्योंकि मसीह ने हाथ के बनाए हुए पवित्रस्थान में, जो सच्चे पवित्रस्थान का प्रतिरुप मात्र है, प्रवेश नहीं किया, वरन स्वर्ग ही में प्रवेश किया कि अब हमारे लिए (जो उसके हैं) **परमेश्वर के सामने प्रकट हो। ... परन्तु अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रकट हुआ कि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को मिटा दे।**

इब्रानियों 2:14 अतः जिस प्रकार **बच्चे** मांस और लहू में सहभागी हैं, तो वह आप भी उसी प्रकार उनमें सहभागी हो गया, ... 17 इस कारण उसके लिए यह आवश्यक हुआ कि **सब बातों में अपने भाइयों के समान बने,** जिससे कि वह परमेश्वर से सम्बन्धित बातों में दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक हो सके और लोगों के पापों का **प्रायश्चित्त करे** (पर्याप्त बलिदान)।

प्रभु – यह जानते हैं कि उसके कौन हैं – जो उस पर विश्वास करेंगे – या जो यदि सुसमाचार सुनेंगे तो

विश्वास करेंगे – **यीशु के लहू ने उनके पापों को क्षमा कर दिया है। वे स्वर्ग में होंगे।**

III. उसने (1) उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं और (2) उसने अपने पुत्र को भेजा कि वह अपने लहू के द्वारा उसकी संतानों को छुड़ाए, अतः सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर कभी **असफल नहीं होता**।

परमेश्वर की इच्छा **निश्चय ही पूर्ण होगी,** भले ही कोई या कुछ लोग बिना सुसमाचार सुनें मृत्यु को प्राप्त कर लें।

2 तिमुथियुस 2:19 फिर भी **परमेश्वर की पक्की नींव अटल** रहती है, जिस पर यह **छाप** लगी है, "**परमेश्वर अपने लोगों को पहिचानता है,**

वे **जो उसके अपने हैं** – जिनके नाम "जीवन की पुस्तक" में लिखे गए हैं – जो बिना सुसमाचार सुनें मर गए – वे सुसमाचार सुनेंगे और उस पर विश्वास करेंगे और बचाए जाएंगे जैसा इन अगले पदों में बताया गया है जो इस बात को प्रकट करता है कि प्रभु अपने बच्चों के लिए कहाँ तक जाएगा।

1 पतरस 3:18-19 मसीह भी सब के पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात अधर्मियों के लिए धर्मी **जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए।** शरीर के भाव से तो वह मारा गया, परन्तु आत्मा के भाव से जिलाया गया। 19 उसी में उसने जाकर उन बन्दी आत्माओं को सन्देश सुनाया

1 पतरस 4:6 इसलिए मरे हुओं को भी सुसमाचार इस अभिप्राय से **सुनाया गया** कि - यद्यपि शरीर में उनका न्याय मनुष्यों के अनुसार हो **- वे आत्मा में परमेश्वर के इच्छानुसार जीवित रहें।**

यह मुझे आश्वस्त करता हैं कि वे **जो उसके अपने हैं** और जिन्हें सुसमाचार सुनने का अवसर नहीं मिला, उन्हें उस बात का दंड **नहीं दिया जाएगा** जिस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं था।

IV. परमेश्वर की इच्छा पूरी होगी :

वह दुःखी होकर, अफ़सोस मनाते हुए हाथ नहीं झटकेगा कि उसका कोई बच्चा उसके पास स्वर्ग नहीं पहुँच पाया।

यूहन्ना 18:9 जिससे कि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था, "जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमें से मैंने एक को भी नहीं खोया।"

यशायाह 14:24 सेनाओं के यहोवा ने यह **शपथ खाई है,** "निस्सन्देह **जैसा मैंने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा** और **जैसी योजना मैंने बनाई है, वैसी ही वह पूरी हो जाएगी**

यशायाह 46:9-11 प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से हैं, क्योंकि **मैं ही परमेश्वर हूं,** अन्य कोई नहीं। मैं ही परमेश्वर हूं, और मेरे तुल्य कोई नहीं है। 10 मैं **अन्त की बात आदि से** और जो बातें अब तक नहीं हुई उन्हें प्राचीनकाल से बताता आया हूं। मैं कहता हूं कि **मेरी योजना स्थिर रहेगी और मैं अपनी भली इच्छा पूरी करुंगा।** 11 ... **निश्चय मैंने यह कहा है और मैं ही इसे पूरा करुंगा। मैंने ही यह योजना बनाई है और निश्चय ही इसे पूरी करुंगा।**

यशायाह 55:11 उसी प्रकार मेरे मुंह से निकलनेवाला **वचन** होगा। **वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, वरन मेरी इच्छा पूरी करेगा** और **जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है उसे पूरा करके ही लौटेगा।**

भजन संहिता 33:11 **यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहती है,** उसके हृदय की योजनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती हैं।

यूहन्ना 6:39 जिसने मुझे भेजा उसकी इच्छा यह है, कि सब कुछ जो उसने मुझे दिया है, उसमें से कुछ भी न खोऊँ, परन्तु अन्तिम दिन में उसे जिला उठाऊँ।

इफिसियों 1:11 उसी में जिसमें **हम भी** (जिन्हें पद 4 में उसने चुना) **उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने**

याकूब 1:18 उसने अपनी ही इच्छा से सत्य के वचन के द्वारा **हमें जन्म दिया** जिस से हम उसके सृजे गए प्राणियों में मानो प्रथम फल हों।

यहूदा 24 अब **जो** ठोकर खाने से तुम्हारी रक्षा **कर सकता है,** और **अपनी महिमा की उपस्थिति में तुम्हें निर्दोष और आनन्दित करके खड़ा कर सकता है,** 25 उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, गौरव, पराक्रम एवं अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।

यदि कोई इस शिक्षा को लेकर यह कहता है, "मैं तो अब जो चाहे कर सकता हूँ क्योंकि मेरे पाप क्षमा हो चुके हैं और मैं स्वर्ग जाऊँगा।"

तो फिर दो विकल्प हैं :

1. वह **चुना हुआ** और परमेश्वर की संतान तो है पर उसको परमेश्वर के मार्ग की और परमेश्वर ने जो कुछ उसके लिए किया, उसकी **थोड़ी या बिलकुल समझ नहीं है।** इसलिए **प्रभु के लिए उसका प्रेम बहुत अल्प है।** (1 कुरिन्थियों 3:1-3)

   वह यह नहीं जानता कि जब वह पाप करता है तो वह **शैतान को हमला करने** की अनुमति देता है जिससे उसको बहुत पीड़ा और विपत्ति आएंगी। (यूहन्ना 5:14)
   परन्तु अब भी उसके पास अनंत जीवन है।

2. वह **चुना हुआ नहीं है** और सचमुच वह परमेश्वर की संतानों में से नहीं है और इसी लिए उसमें **न तो**

यीशु के लिए कोई प्रेम है और **न ही** प्रभु को भावता हुआ जीवन जीने की **कोई प्रेरणा**। हो सकता है वह अपने मुंह से तो कहे कि "मैं विश्वास करता हूँ", लेकिन **अपने मन से उसका विश्वास न करता**।

रोमियों 10:9-13 यदि तू अपने मुख से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और **अपने मन में यह विश्वास करे** कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया तो तू उद्धार पाएगा। 10 क्योंकि धार्मिकता के लिये **मन से विश्वास किया जाता है,** और उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है। 11 क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है, "जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा।" 12 यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है। 13 क्योंकि, "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"

यूहन्ना 14:23-24 यीशु ने उत्तर देते हुए उस से कहा, **"यदि कोई मुझ से प्रेम करता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा,** और मेरा पिता उस से प्रेम करेगा, और हम उसके पास जाएँगे तथा उसके साथ निवास करेंगे। 24 **जो मुझ से प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन का पालन नहीं करता।** और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन पिता का है जिसने मुझे भेजा।

मत्ती 7:19-20 **जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता,** वह काटा और आग में डाला जाता है। 20 इस प्रकार **उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।**